ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 28 अक्तूबर 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 28 अक्तूबर 2018 से 03 नवम्बर 2018

आश्विन कृ. – 04 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 43, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

दक्षिण एशियाई देशों में पर्यटन की अपार संभावनाएँ

"दक्षिण एशिया के देशों उद्योग के विकास हेतु असीम सम्भावनाएँ मौजूद है जरूरत इस बात की है कि दक्षिण एशिया के देशों की सरकारें उस दिशा में मिलकर ऐसे स्थानों की सूची बना कर उन्हें विश्व परिदृश्य पर रेखांकित कर उनका विकास करें जो वर्तमान में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है" यह बात शुक्रवार को राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष व कोटा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. पी.के. दशोरा ने दयानन्द महाविद्यालय अजमेर के सभागार में कही।

दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह में बोलते हुए मुख्य अतिथि डॉ. दशोरा ने कहा कि दक्षिण एशियाई देशों में अनेक सांस्कृतिक सामाजिक आर्थिक राजनैतिक वनस्पतिक धार्मिक पराम्पागत ऐतिहासिक भौगोलिक सामाजिक विरासतें मौजूद हैं जिनका विकास अभी शेष है। डॉ. दशोरा ने कहा कि भारत कला व संस्कृतियों का धनी

राष्ट्र है दक्षिण एशिया के देशों में आने वाले पर्यटक भारत की भूमि पर पनपी विश्व विरासत को जरूर देखने आएँ तभी सार्क देशों की अर्थव्यवस्था को आधार मिलेगा।

विशिष्ट अतिथि डी.ए.वी. कॉलेज अमृतसर के प्राचार्य डॉ. राजेश कुमार ने अपने उद्बोधन में बताया कि दक्षिण एशिया में प्रकृति द्वारा अनेक ऐसी रचनाएँ प्रदान की गई हैं जिसे देखने की तमन्ना हर व्यक्ति की होगी परन्तु जानकारी के अभाव में ऐसा होना संभव नहीं हो पा रहा है। इस अवसर पर बोलते हुए कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डी.ए.वी. कॉलेज नकोदर के प्राचार्य डॉ. अनूप कुमार ने पर्यटन उद्योग के अनेक आयामों पर विस्तार से अपनी बात रखी।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय पर्यावरण विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो प्रवीण माथुर द्वारा दक्षिण एशिया में पर्यटन की अपार सम्भावना व चुनौतियों पर अपने विचार रखे।

डी.ए.वी. साहिबाबाद में राष्ट्रपिता को स्मरणांजलि

अहिंसा के आराधक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, राजेंद्र नगर, साहिबाबाद ने 'स्वच्छ भारत–स्वच्छ विद्यालय' विषय को साकार करते हुए बापू को स्मृति–प्रसूनों की पुष्पांजलि समर्पित की। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों और शिक्षकों ने अनेक कार्यक्रमों को आकार देते हुए विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया जिसमें लगभग 5000 विद्यार्थियों ने स्वच्छ भारत हेतु कृतसंकल्प होने की शपथ ग्रहण करते हुए विद्यालय के कक्षा–कक्ष खेलकूद के मैदान, उपवन, जलपान गृह और शौचालय की स्वच्छता में अपना सहयोग दिया तथा अनेक प्रकार की गतिविधियों द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग को निजी

स्वच्छता और जागरुकता हेतु प्रेरित किया। तदुपरांत विद्यालय के आस–पास की सड़कों एवं पार्कों को स्वच्छ करने के साथ–साथ नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति द्वारा समाज में जागरूकता का प्रचार–प्रसार किया। विद्यार्थियों ने पौधारोपण द्वारा पर्यावरण को हरा–भरा और स्वच्छ रखने हेतु हरित–क्रांति का आह्वान किया तथा 'बदलते भारत की तस्वीर' और 'अपने स्वप्नों का भारत' विषय पर अपने उद्गार अभिव्यक्त किए।

विद्यालय प्रधानाचार्य श्री वी.के. चोपड़ा ने इस अवसर पर कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देश को सत्य, प्रेम और अहिंसा के मार्ग का अनुकरण करने की प्रेरणा देते हुए मानवता का संदेश दिया था उनका सपना था कि भारत स्वच्छ–सुंदर हो और भारतवासी तन–मन से निर्मल एवं पवित्र हों। आज इन्हीं मूल्यों के निर्वहन के प्रति हम प्रतिबद्ध हैं जिसमें युवा शक्ति की सशक्त भूमिका है। इस दृष्टि से विद्यालयों द्वारा किए गए प्रयासों से समाज में परिवर्तन की संभावनाएँ विकसित होती हैं और देश उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। आज महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती के अवसर पर हमारी ओर से किया गया यह प्रयास उनके महामना स्वरूप की वंदना तथा उनके प्रति आभार–अभिव्यक्ति है।

बठिण्डा में मासिक यज्ञ की परम्परा का शुभारम्भ

डी.ए.वी. कॉलेज, बठिण्डा की आर्य सभा द्वारा 'मासिक यज्ञ' की परम्परा का शुभारम्भ किया गया। इस परम्परा के तहत मास के प्रथम सप्ताह में यज्ञ कर कॉलेज की उन्नति व विश्व कल्याण की कामना ईश्वर से की गई। इस यज्ञ में प्रथम यजमान की भूमिका का निर्वहन कॉलेज उपप्राचार्या प्रो. वरेश गुप्ता द्वारा किया गया।

विविध मंत्रोच्चारण से यज्ञ करते हुए 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की कामना से

यज्ञाग्नि में आहुतियाँ डालकर वैदिक परम्परा का पालन किया गया। स्टाफ के सभी प्राध्यापकों ने इस यज्ञ में आहुतियाँ डालकर विश्व कल्याण की प्रार्थना की।

कॉलेज उपप्राचार्य प्रो. वरेश गुप्ता ने कहा कि इस मासिक यज्ञ परम्परा से नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का विकास होगा। इस यज्ञ परम्परा का लक्ष्य सम्पूर्ण डी.ए.वी. कॉलेज, बठिण्डा व उससे सम्पृक्त लोगों के कल्याण कामना के साथ–साथ विश्व कल्याण की भावना भी है। विश्व स्वास्थ्य की और बढ़े, उसी उद्देश्य को प्रमुख रखकर यज्ञ में आहुतियाँ डाली गई है।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 28 अक्टूबर 2018 से 03 नवम्बर 2018

सर्वाङ्ग-सुन्दर बनें

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिः, अगन्महि मनसा सं शिवेन।
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायो, अनु मार्ष्टु तन्वो यद् विलिष्टम्।।

यजु. २.२४

ऋषिः **वामदेवः**। देवता **त्वष्टा**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● [हम] (**वर्चसा**) ब्रह्मवर्चस से [और], (**पयसा**) दूध से, माधुर्य से, (**सम् अगन्महि**) संयुक्त हों, (**तनूभिः**) शरीरों से, (**सम्**) संयुक्त हों, (**शिवेन मनसा**) शिव मन से, (**सम्**) संयुक्त हों।, (**सुदत्रः**) शुभ दानी, (**त्वष्टा**) जगद्–रचयिता परमेश्वर, (**रायः**) [धन, चक्रवर्ती राज्य, सुख, आरोग्य आदि] ऐश्वर्यों को, (**वि–दधातु**) प्रदान करे, [और], (**यत्**) जो, (**तन्वः**) शरीर का, (**विलिष्टं**) त्रुटिपूर्ण अंग है, उसे, (**अनु मार्ष्टु**) परिमार्जित करे।

● हम चाहते हैं कि हम संसार में सर्वांग–सुन्दर बनकर रहें, षोडशकल चन्द्र के समान परिपूर्ण बनकर निवास करें। हमारे अन्दर ब्रह्मवर्चस हो, आत्मिक तेज हो, जिसके सम्बन्ध में कभी ऋषि विश्वामित्र ने कहा था कि ब्रह्म–तेज ही सच्चा बल है, अन्य बल उसके सम्मुख निःसार है। वह ब्रह्म–तेज का ही बल है, जिसके द्वारा शरीर से दुर्बल होते हुए भी अनेक मानव कोटि–कोटि जनों को अपने चरणों में झुकाते रहे हैं। साथ ही हमें 'पयः' भी प्राप्त हो। 'पयस्' शब्द दूध का वाचक होता हुआ भी रस, माधुर्य, शान्ति, निर्मलता, निश्छलता, सात्त्विकता आदि का भी द्योतक है। हमें पीने के लिए गो–रस और हृदय में बसाने के लिए उक्त माधुर्य आदि गुण प्राप्त हों। हम शरीरों से भी पुष्ट हों। हृदय में बसाने के लिए उक्त माधुर्य आदि गुण प्राप्त हों। हम शरीरों से भी पुष्ट हों। हमारे अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय रूपवाले पंच शरीरों का समुचित विकास हो। हमारा मन भी शिव हो, क्योंकि जब तक मन अशिवसंकल्पों से युक्त रहेगा, तब तक हमें किसी भी क्षेत्र में उत्कर्ष प्राप्त होना सम्भव नहीं है। मन को साधकर ही मनुष्य उन्नति की ओर अग्रसर होता है, और मन की जीत पर ही उसकी जीत निर्भर है, मन के हारने पर उसका हारना अवश्यम्भावी है।

'त्वष्टा' परमेश्वर सारे जगत् का तरखान है, शिल्पी है, जिसका हस्त–कौशल सम्पूर्ण विश्व में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। वह **'सुदत्र'** है, निरंतर सबको शुभ वस्तुओं का दान करता रहता है। वह हमें भी शुभ ऐश्वर्यों का–धन, चक्रवर्ती राज्य, सुख, आरोग्य आदि का दान करे। वह हमें भौतिक एवं आध्यात्मिक समस्त शुभ सम्पत्तियों का अधीश्वर बनादे। हमारे शरीर का कोई अंग यदि सदोष या त्रुटिपूर्ण हो गया है, तो वह कुशल शिल्पी उसे परिमार्जित, सुसंस्कृत एवं परिशुद्ध कर दे। यदि हमारे नेत्रों की दृष्टि–शक्ति मन्द हो गई है अथवा दृष्टि–शक्ति मन्द हो गई है अथवा दृष्टि–शक्ति तीव्र होते हुए भी हम उसका उपयोग अभय दृश्यों को देखने में करते हैं, तो त्वष्टा प्रभु हमारी मन्द या अपवित्र नेत्र–शक्ति को शुद्ध कर दें। इसी प्रकार श्रोत्र, मुख, नासिका आदि अन्य अंगों को भी मांजकर तीव्र–शक्तिमय एवं पवित्र कर दे। हे कलाकार त्वष्टा प्रभु! तुम हमारी तूलिका से रंग भरकर हमें सर्वांग–सुन्दर, सर्व–गुण–सम्पन्न और सर्व–शक्ति–समन्वित कर दो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

भगवान शंकर और दयानन्द

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में स्वामी जी ने एक कथा के माध्यम से बताया कि सुख तो आत्मा को समझाने और जानने में है। शरीर का रोग कोई रोग नहीं। सबसे बड़ा रोग है आत्मा को भूल जाना, शरीर तो माया है, पाँच तत्त्व का पुतला, एक मशीन। ब्रह्म की खोज आरम्भ करने से पूर्व चार वस्तुओं को होना आवश्यक है। पहली उसे आत्मा और अनात्मा का पता हो। दूसरी वह लोक और परलोक के लोभ से वैरागी हो गया हो। तीसरी उसके पास छः प्रकार की सम्पत्ति हो और चौथी उसके अन्दर मुक्ति पाने की इच्छा हो। यह छः प्रकार की सम्पत्ति है– शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान। महर्षि दयानन्द ने इन्हीं चार बातों की चर्चा 'सत्यार्थप्रकाश' में की है। पहली बात को कहते हैं विवेक। दूसरी बात को कहते हैं वैराग्य–प्रत्येक प्रकार के फल की इच्छा को त्याग देना, निष्काम भाव से कर्म करते जाना। तीसरी बात को कहते हैं षट् सम्पत्ति–छः प्रकार की सम्पत्ति। इनमें पहले प्रकार की सम्पत्ति है शम–प्रत्येक दशा में शान्त रहो। संसार तो शान्त नहीं है। हर ओर उथल–पुथल मच रही है। इन सब के होते हुए शान्त रहना–यह है शम।

अब आगे ...

दूसरा दिन

प्यारी माताओ और सज्जनो!

जगद्गुरु शंकराचार्य और महर्षि दयानन्द की बात कह रहा था मैं। दोनों ने कहा–

''अथातो ब्रह्मजिज्ञासा''

(अब ब्रह्म की खोज आरम्भ होगी) कहने से पूर्व कहने वाले में चार गुण होने चाहिएँ। वेदान्त और आत्मिक ज्ञान की भाषा में इन चार गुणों को 'साधन चतुष्टय' कहते हैं। श्री शंकराचार्य ने 'विवेक–चूड़ामणि' और 'तत्त्वबोध' में और महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' और 'ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका' में इसका वर्णन किया है। कुछ कह सकते हैं कि खोज तो बह्म की करनी है, फिर पहले इन चार गुणों की क्या आवश्यकता है? क्या कोई व्यक्ति बिना पढ़े–लिखे जाकर कह सकता है कि मुझे इंजीनियरिंग के कॉलेज में प्रविष्ट करके इंजीनियरिंग की, या मैडिकल कॉलेज में प्रविष्ट करके डॉक्टर की डिग्री दे दो? नहीं, इन कॉलिज में प्रविष्ट होने से पूर्व कुछ और डिग्रियाँ प्राप्त करनी पड़ती हैं। इसी प्रकार 'ब्रह्मप्राप्ति' के कॉलिज में प्रविष्ट होने से पूर्व भी चार साधनों को अपनाकर चार गुण अपने अन्दर उत्पन्न करने पड़ते हैं। वे चार गुण हैं आत्मा और अनात्मा का विवेक, लोक और परलोक में कर्म के फल से वैराग्य, षट् सम्पत्ति और मुक्ति की तीव्र इच्छा।

इन चारों गुणों का वर्णन करते हुए जगद्गुरु शंकराचार्य 'विवेक–चूड़ामणि' के 64वें श्लोक में कहते हैं, ''जैसे रोगी पुरुषों का रोग केवल औषध का नाम सुन लेने मात्र से दूर नहीं हो जाता, ऐसे ही भवबन्ध से ब्रह्म का साक्षात् अनुभव किये बिना केवल यह कह देने से कि 'मैं ब्रह्म हूँ' कोई मुक्ति नहीं पा सकता। मैं ब्रह्म हूँ, ऐसा कहने का अधिकार उस व्यक्ति को है, जिसने इन चारों गुणों को क्रियात्मक रूप देकर परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया है।'' आगे चलकर एक और स्थान पर उन्होंने कहा है, ''सब शत्रुओं को नष्ट किये बिना और सबको विजय किये बिना जैसे कोई व्यक्ति 'मैं राजा हूँ' ऐसे कहने से राजा नहीं हो जाता, उसी प्रकार इस भवसागर से पार उतरे बिना कोई व्यक्ति 'मैं ब्रह्म हूँ' कहने से मुक्त नहीं हो सकता।''

इन चार गुणों की चर्चा मैंने पहले की थी। उनमें से 'षट् सम्पति' छः प्रकार की सम्पत्ति में से पहली के सम्बन्ध में भी कहा था। यह सम्पत्ति है 'शम'–प्रत्येक दशा में अपने–आप को शान्त रखना। सुख में और शान्ति में तो सब व्यक्ति शान्त रहते ही हैं। जब सुख और शान्ति दोनों न हों, चहुँ ओर ज्वालाएँ जल रही हों, उथल–पुथल हो रही हो, पृथिवी काँपती हो, नौका डगमगाती हो, तूफ़ान चीखता फिरता हो, बाढ़ डराती हो, तब भी शान्त रहना, इसका नाम 'शम' है।

आप कहेंगे–संसार में कौन है जो शान्त रहना नहीं चाहता? कौन है जो दुःखी होना चाहता है? कौन है जो भूखा रहना चाहता है, निर्धन होना चाहता है, चिन्ता में डूबना चाहता है? परन्तु जब यह सब–कुछ हो तब व्यक्ति शान्त रहे तो किस प्रकार? इस प्रश्न का उत्तर

सुनिये। मनुष्य के अन्दर शान्ति तब आती है, जब उसके अन्दर मानसिक बल हो। मेरा मन जब मेरा बन जाए तब शम का गुण प्रकट होता है अवश्य। आप कहेंगे, मानसिक बल को उत्पन्न करने की विधि क्या है? वह भी सुनिये। बल को पैदा करने की विधि है संसार को उसके वास्तविक स्वरूप में समझना। दो प्रकार के तत्त्व हैं संसार में–एक 'आत्मतत्त्व' है, दूसरा 'अनात्मतत्त्व'–ऐसा तत्त्व जो आत्मा नहीं है, केवल प्रकृति है, माया है, नाश होनेवाला है। दोनों को पहचानो। जो नाश होनेवाला है उसका आश्रय न लो। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो सहस्त्र वर्ष, लाख वर्ष, करोड़ वर्ष के पश्चात् वह समाप्त हो ही जाएगा निश्चित रूप से। तब तुम निराश्रय हो जाओगे। और लाख या करोड़ वर्ष की बात क्या, यह तो प्रतिक्षण परिवर्तित और नष्ट होता है। क्षण–क्षण में रंग–रूप बदलता है, वास्तविक नहीं है। पिता समझता है कि वह पुत्र का आश्रय लेगा, पुत्र समझता है वह पिता का आश्रय लेगा। दोनों नहीं समझते कि एक दिन पिता रहेगा न पुत्र। एक मनुष्य मित्र का सहारा ढूँढ़ता है, दूसरा शक्ति का, तीसरा शासन का। मैं तो यह कहता हूँ कि माया को अपने स्थान पर समझो, यह ठगिनी है; सदा साथ नहीं देगी। सर्वदा साथ देनेवाला वेद के अनुसार परमात्मा है। वेद में कहा है–

''प्रजापति! तुझसे बड़ा संसार में कोई नहीं। जिस कामना को लेकर मैं तुझे बुलाता हूँ उसे पूरा करो। मुझे अनन्त सम्पत्तियों का स्वामी बनाओ।''

तो मैं नहीं कहता कि धन और शक्ति, शासन और सम्बन्धी बुरे हैं; अच्छे हैं वे। उचित रूप से उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न अवश्य करो, परन्तु उन्हें आश्रय बना लोगे तो अवश्य धोखा खाओगे। वे सदा रहनेवाले नहीं, अन्त में धोखा देते हैं। *आश्रय लेना है तो उसका लो जो सदा* रहता है, जो कभी धोखा नहीं देता। ये माता और पिता, बेटे और बेटियाँ, सगे और सम्बन्धी कोई भी साथ नहीं जाते। धन और मकान, शासन और जागीर सब यहीं रह जाते हैं। मरते समय प्रत्येक व्यक्ति को यह बात अनुभव होती है। सिकन्दर ने भी कहा था–'मेरे हाथ खोल दो जिससे लोग देखें कि उनमें कुछ नहीं है।' मैंने जीते जी इस बात का अनुभव किया। कैलास की यात्रा में मेरे दस साथी थे–नौ बंगाली, एक मद्रासी। गरबियांग से हम चले तो अपने लिए तम्बू इकट्ठे लिये। पथ–प्रदर्शक लिया। खाने का राशन भी उठा लिया। मैं हँसता हूँ। दूसरों को भी हँसाता हूँ। मेरे वे साथी कहते थे, ''आनन्द स्वामी! तेरे साथ रहने में जो आनन्द है, वह हमने कभी देखा नहीं, हम तो अब तेरे साथ ही रहेंगे।'' मैंने हँसते हुए कहा, ''रहो न, इससे अच्छा क्या है!'' परन्तु वापस आती बार मैं बर्फ से गिर पड़ा। लिप्पू लेक घाटी पर बर्फ बहुत थी। पाँव फिसला। दूर तक फिसलता गया। बर्फ के एक तोदे ने रोक लिया, नहीं तो आज आपको यह भाषण न सुन पड़ता। कठिनता से उठा परन्तु पाँव चिल्ला उठा कि मैं टूट चुका हूँ। उसे घसीटता हुआ 'पंजम' तक पहुँचा। 'पंजम' नगर या ग्राम नहीं, केवल एक खुले वीरान मैदान का नाम है। मेरे बंगाली साथियों ने जब देखा कि यह तो चल नहीं सकता, तो मुझे वहीं छोड़कर चले गये। थोड़ी देर बाद मद्रासी आये, वे भी जल्दी का बहाना करके चले गये। उन्हें गरबियांग पहुँचना था। मैं अकेला रह गया था; चल नहीं सकता था; आस–पास कोई व्यक्ति नहीं था। तभी कीचखम्बा का भाई आया। उसे मैंने कहा कि मैं चल नहीं सकता, कीचखम्बा को बोलो कि या तो झब (तिब्बती बैल) भेजे या कम्बल, जिससे रात्रि व्यतीत कर सकूँ। पर्याप्त रात्रि व्यतीत होने पर कीचखम्बा आया। मुझे साथ लेकर गरबियांग पहुँचा। वहाँ पहुँचकर सुना कि बंगाली और मद्रासी सब आगे चले गये हैं। मैं चल नहीं सकता था। एक दिन पड़ा रहा, दो दिन पड़ा रहा। अन्त में कीचखम्बा ने कहा, "यहाँ कब तक पड़े रहोगे? सर्दी बढ़ती जाती है, कुछ ही दिनों में बर्फ पड़ने लगेगी, मार्ग बन्द हो जायेंगे। एक डाण्डी करा लो, उसमें धारचूला तक चले जाओ, उससे आगे घोड़ा मिल जाएगा।" काफ़ी रुपयों पर एक डाण्डी कर ली गई। छः कुलियों ने उसे उठाया। धारचूला की ओर चले हम लोग। रात्रि हुई तो जंगल में ही एक स्थान पर ठहर गए। देवदार का एक बड़ा वृक्ष था, उसके नीचे मैं लेट गया। मेरे पास कुलियों ने अग्नि जला दी जिससे जंगली पशु न आयें। उसी समय दो कुली नीचे से आये। उन्होंने बताय कि आगे पहाड़ टूट गया है, जाने का मार्ग नहीं; दो साधु टूटे पहाड़ में जाने का प्रयत्न करते हुए मर गए हैं। मेरे कुलियों ने सुना तो बोले, "हम आगे नहीं जाएँगे।" मैंने कहा, "अभी तो सो जाओ, प्रातः उठकर देखेंगे कि क्या करना है।" परन्तु जब प्रातः उठा तो देखा, कुलियों का कहीं चिन्ह भी नहीं। वे रात के अँधेरे में ही चले गये थे। मैं चकित हुआ कि अब क्या करूँ? जलती हुई अग्नि मेरे पास थी। कुली कृपा कर मेरे कमण्डल में पानी भर गये थे। केवल छः बिस्कुट मेरे पास थे। चल मैं सकता नहीं था। नदी भी आधा मील नीचे थी। दिनभर बैठा रहा। रात्रि आ गई। अग्नि में कुछ और लकड़ियाँ डालकर बैठा रहा। दूसरा दिन हो गया। इसी प्रकार तीन दिन व्यतीत हो गये। तीन रातें व्यतीत हो गईं। छः बिस्कुट जो मेरे पास थे, वे भी समाप्त हो गये, पानी भी समाप्त हो गया। मैंने समझा अब मेरा अन्तिम समय आ गया है। उस समय कौन था मेरा! हनुमान रोड वाले, कनॉट प्लेस वाले, किसी आर्य समाज का मन्त्री, किसी सभा का प्रधान, कोई भी नहीं था, किसी का आश्रय न था। उस समय मेरे हृदय के भीतर से कोई चिल्ला उठा–

किस संग कीजे मित्रता,
सब जग चालनहार।
निश्चत केवल है प्रभु,
उन संग कीजे प्यार।।

उस समय बेटे नहीं थे, बेटियाँ नहीं थीं, जागीर नहीं थी, व्यापार नहीं था, जिस आर्यसमाज के लिए काम किया उसका कोई प्रधान या मन्त्री भी नहीं था। वे बंगाली नहीं थे जिन्होंने कहा था, "आनन्द स्वामी, तू बहुत अच्छा है।" वे मद्रासी नहीं थे, जो कहते थे, "सदा तेरे साथ रहेंगे।" कोई नहीं था, केवल प्रभु था एक, उसकी कृपा से तीसरे दिन की सायं कुछ नैपाली कुली आये। उनकी सहायता से मैं धारचूला पहुँचा।

अरे सावधान! सँभलकर देखो। जिस संसार के पीछे तुम पागल हुए जाते हो यह किसी के साथ नहीं गया, कभी किसी के साथ जाएगा भी नहीं, यह नष्ट होनेवाला है। सदा साथ देने वाला नहीं है, इस पर विश्वास मत करो!

इस प्रकार मन को समझाओगे तो वश में आएगा। मन वश में आ जाये तो फिर आनन्द भी आएगा। स्वप्न देखते समय इन्द्रियाँ सो जाती हैं, मन जागता रहता है। मन भी सो जाए तो गाढ़ निद्रा आ जाती है। केवल आत्मा जागता रहता है। जागकर मनुष्य कहता है, "आज सोने में बहुत आनन्द आया।" अरे! आनन्द किसको आया? तुम तो सो रहे थे! आया उसको जो कभी सोता नहीं, जो सदा जागता है–आत्मा। इस आत्मा को जान लेने से मनुष्य प्रत्येक दशा में शान्त रहता है। यह पहला साधन है। शम का अधिकारी बनने के लिए मन को वश में करो।

जगद्गुरु शंकराचार्य से उनके शिष्य ने पूछा, "जगत् को कौन जीत लेता है?" जगद्गुरु बोले, "जो मन को जीत लेता है।"

बहुत बुरा–भला कहा मन को शंकर ने। एक स्थान पर वह कहते हैं, "इच्छाओं का एक भयंकर जंगल है जिसमें मन नाम का भयानक सिंह रहता है। जो लोग आत्मा का दर्शन करना चाहते हैं उन्हें इस जंगल में नहीं जाना चाहिए।"

कुछ लोग कहते हैं, "हम तो इस जंगल में जाना नहीं चाहते, यह सिंह ले जाता है, यह सिंह है जो छोड़ता ही नहीं, इससे छुटकारा कैसे पायें?"

महाराज जनक से भी एक बार किसी ने यह प्रश्न पूछा था। जनक एक वृक्ष के पास खड़े थे; बोले, "यह वृक्ष मुझे छोड़ दे तो आपके प्रश्न का उत्तर दूँ।" पूछनेवाले ने कहा, "महाराज! आप ज्ञानी होकर मूर्खों की – सी बात करते हैं। वृक्ष ने आपको नहीं पकड़ रखा है, आपने वृक्ष को पकड़ रखा है। यह वृक्ष तो जड़ है, यह आपको क्या पकड़ेगा?"

आजकल वह व्यक्ति होता और आजकल जनक ऐसा कहते तो वह व्यक्ति उन्हें कहता –

भले–बुरे तो खुद[1] करे लानत[2] करे शैतान पर।

1. बुरा कर्म, 2. धिक्कार

जनक ने कहा, "तू ठीक कहता है भाई! यह वृक्ष जड़ है, इसने नहीं, मैंने इसको पकड़ रखा है। परन्तु याद रख, मन भी तो जड़ है! उसने तुम्हें पकड़ नहीं रखा, फिर मुझसे क्यों कहते हो कि वह छोड़ता नहीं?" यह है दूसरा साधन मन को वश में करने का। मन की वास्तविकता को समझो, वह जड़ है, उसमें कोई शक्ति नहीं। शक्ति तुम्हारे अन्दर है, ऐसा समझोगे तो मन वश में अवश्य हो जाएगा।

दूसरा साधन है विचार, निरन्तर यह सोचना कि मेरा लक्ष्य क्या है। बार–बार सोचो, लक्ष्यप्राप्ति के लिए एक तीव्र इच्छा अपने अन्दर उत्पन्न करो, सोते–उठते–बैठते–जागते उसका ध्यान रखो –

ज्यों त्रिया पीहर बसे, सुरत रहे पिय माँहि।
तैसे नर जग में रहे, प्रभु को बिसरे नाँहि।।

आजकल वैज्ञानिक भी कहते हैं – यदि किसी बात को बार–बार सोचो तो वह अवश्य होती है। कभी थोड़ा समय लगता है, कभी अधिक; किसी–न–किसी समय होती अवश्य है।

परन्तु आजकल हम क्या सोचते हैं? कोई सोचता है मैं मन्त्री बन जाऊँ, कोई सोचता है मेरे मकान में बिजली लग जाये, कोई सोचता है मेरे पास धन के ढेर लग जाएँ। याद रखो! इन नाशवान् वस्तुओं के लिए सोचते रहोगे तो अन्त में नाश ही मिलेगा। उपनिषद् कहती है कि मनुष्य अपने बनाये हुए संसार में उत्पन्न होता है। आप कहेंगे कि आर्यसमाज के प्लेटफ़ॉर्म से मैं यह क्या कहता हूँ? परन्तु मैं वह कहता हूँ जो वेद कहता है। सृष्टि में शक्ति ईश्वर की है, शेष सब–कुछ आत्मा की

शेष पृष्ठ 09 पर

उपदेशक को परमात्मा की ओर से अलौकिक शक्ति कब मिलती है ?

● भावेश मेरजा

(नोट : महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जोधपुर से दि. 5 अगस्त 1883 को उदयपुर नरेश महाराणा सज्जनसिंह के मन्त्री श्री किसन (कृष्ण) सिंह जी बारहठ को एक महत्त्वपूर्ण पत्र लिखा था। वैसे तो इस पूरे पत्र में कुल तीन बिन्दु हैं परन्तु यहाँ केवल प्रथम दो बिन्दुओं को प्रस्तुत किया गया है। इस पत्र में महर्षि ने धर्म रक्षा के लिए ईसाई आदि के साथ शास्त्रार्थ या वार्तालाप करने के लिए उपदेशक में कौन–सी योग्यता अपेक्षित है, किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है इत्यादि महत्त्वपूर्ण बातों का संकेत किया है। आशा है कि आर्यों को यह पत्रांश पठनीय लगेगा।)

ओ३म्

श्रीयुत बारहठ किसनजी,

आनन्दित रहो।

पत्र आपका आया। समाचार विदित हुआ। यह पत्र सर्वाधीशों (उदयपुराधीशों) को दृष्टिगोचर करा देना।

1. मेरी भी यह मनसा नहीं है, न थी कि पादरियों के सामने शास्त्रार्थ ही किया जाय, किन्तु जिससे कोई अपनी प्रजा का पुरुष उनके मज़हब में न फसे वैसा उपदेश किया जाए इसलिये वे छोटे–छोटे खण्डन जो कि मैंने भेजे हैं वे छपवा कर योग्य–योग्य पुरुषों को चाहे वे पण्डित हों वा बुद्धिमान् हों बाँट कर प्रचार करने से उनके फँदे में कोई भी न फँसेगा। आप से आप बहुत–से उपदेशक उसी राज्य के पुरुष हो जाएँगे। इसका बाँटना विशेष कर सरदार हाकम भूमिये थाने वा अच्छे–अच्छे गामों में अथवा जहाँ कहीं कोई बुद्धिमान् हो इसको देखकर उन ईसाइयों को हटा दें और यदि श्रीमानो के नियमानुसार उपदेश कहीं करना हो तो वहाँ राज के नौकर बहुत–से पण्डित हैं जिसको योग्य समझे उसे यह दोनों पुस्तक देकर उपदेशक कर दें।
2. जैसा श्रीमान् महाशयों ने लिखा है वैसा उपदेशक आर्य समाज से आने में अशक्य नहीं है। किन्तु जो उस पत्र में नियम लिखे हैं उनके अनुसार और ईसाई आदि का खण्डन होना अशक्य है। क्योंकि जब तक उपदेशक झूठ मत को मानेगा और दूसरे झूठे मत के खण्डन में प्रवृत्त होगा कुछ भी न कर सकेगा। जब तक मनुष्य स्वयं झूठी बातों का त्याग करके सत्य बातों में निश्चित प्रवृत्त नहीं होता तब तक वह अलौकिक शक्ति परमात्मा की ओर से नहीं मिलती और न दृढ़ोत्साही वह हो सकता है। यावत् इन ईसाई आदि के सामने वैदिक मतानुसार ईश्वर, धर्म आदि को नहीं मानता और मूर्तिपूजा आदि को मानता है। जब तक वह जाएगा खण्डन करने को आप ही खण्डित हो रहेगा। जैसे कोई किसी को दुर्व्यसन छुड़ाने का उपदेश करता और आप ही उसी दुर्व्यसन में फँसा है तो उसका उपदेश कोई भी न मानेगा। इसलिये अशक्यता लिखी थी। नहीं तो पण्डित तो क्या, किन्तु एक कोई साधारण उपदेशक भी आर्य समाज का आए तो इनका कुछ भी बल न चले। इसलिये जो उपाय मैंने उनके निवारण के लिये लिखा है वह अच्छा है, परन्तु ईसाई आदि के सामने जब कभी बातचीत हो तब अति उचित है कि उस समय मूर्ति और पुराण का पक्ष छोड़ ही कर बोलें तभी कृतकारी होगा...।

(दयानन्द सरस्वती), जोधपुर मारवाड़

(सन्दर्भ ग्रन्थ : 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन', द्वितीय भाग, पृष्ठ 748–750, पूर्ण संख्या 738, सम्पादक : पण्डित भगवद्दत्त जी, तृतीय संस्करण 1981 ई.)

8–17 टाऊनशिप, पो. नर्मदानगर, जि. भरूच,
गुजरात–392015, मो. 9879528247

दयानन्दाब्द में परिवर्तन कब करें?

● डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री

शङ्का–महर्षि का जन्म कहीं 14 फरवरी 1825 लिखा है और कहीं 1823 लिखा है। सही तिथि क्या है?

–मंगलदेव आर्य, सबलाना, भरतपुर

समाधान – महर्षि दयानन्द सरस्वती *का स्वजन्म विषयक संक्षिप्त संकेत निम्नवत्* है– "संवत् 1881 के वर्ष में मेरा जन्म..... हुआ था।" महर्षि ने तिथि मास का उल्लेख नहीं किया है। इसी कारण भाद्रशुक्ल नवमी, 2 सितम्बर 1824; फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा, 19 फरवरी 1825; आश्विन बदी सप्तमी, 15 सितम्बर 1824 तथा फाल्गुन बदी दशमी, 12 फरवरी 1825, का उल्लेख जन्मतिथि के रूप में मिलता है। महर्षि जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं शिवरात्रि, चौदहवें वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक यजुर्वेद की संहिता सम्पूर्ण ... तथा गृहत्याग आदि के आधार पर सार्वदेशिक धर्मार्य सभा ने 23 जुलाई 1960 को **"संवत् 1881, फाल्गुन बदी दशमी (12 फरवरी 1825) दिन शनिवार" महर्षि की जन्मतिथि स्वीकार की।** सार्वदेशिक की अन्तरंग सभा ने 2 अप्रैल 1967 को उक्त निर्णय की पुष्टि की।

अतः महर्षि की जन्मतिथि फाल्गुन बदी दशमी, संवत् 1881 दिन शनिवार (12 फरवरी 1825ई.) है।

जन्मतिथि विषयक विस्तृत विवेचन जिसमें उक्त तिथि का समर्थन तथा अन्य पक्षों का युक्तिपुरस्सर निरसन डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री लिखित 'महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रामाणिक जन्मतिथि' द्रष्टव्य है। डॉ. भवानीलाल भारतीय ने अपने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'नवजागरण के पुरोधाः दयानन्द सरस्वती' में भाद्रपद शुक्ला नवमी को महर्षि की जन्मतिथि स्वीकार किया था, किन्तु डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री की इस परिश्रमपूर्ण कृति के प्रकाशन पर डॉ. भारतीय ने भाद्रपद शुक्ला नवमी को छोड़कर फाल्गुन बदी दशमी को उचित स्वीकार किया है–द्रष्टव्य डॉ. शास्त्री कृत ग्रन्थ का परिशिष्ट–5, पृ. 105।

(समाधाता–डॉ. वेदपाल, मेरठ, परोपकारी, मार्च (द्वितीय) पृ. 28, 2018 ई., स्तम्भ–शङ्का समाधान–21 के अन्तर्गत)

डॉ. भारतीय के 'नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती' के द्वितीय संस्करण (प्रकाशक–श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन सिटी राजस्थान) में डॉ. भारतीय ने स्वलिखित टिप्पणी में भी अपना संशोधित मत दे दिया है। डॉ. शास्त्री की पुस्तक 'ऋषि दयानन्द सरस्वती की प्रामाणिक जन्मतिथि' का प्राक्कथन आर्य समाज के **इतिहासपुरुष** प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' ने लिखा है।

प्रस्तुत शङ्का–समाधान से यह स्पष्ट है कि प्रतिवर्ष दयानन्दाब्द में परिवर्तन का समय फाल्गुन कृष्णपक्ष (बदि) दशमी है। सो इस वर्ष 2018 में यह तिथि 10 फरवरी 2018 को पड़ी है। अतः 10 फरवरी को या इसके बाद जो भी नया अंक प्रकाशित हो उसी अंक में दयानन्दाब्द का परिवर्तन करके नवीन दयानन्दाब्द छपना चाहिए। परन्तु देखने में यह आ रहा है कि आर्य समाज की अधिकांश पत्रिकायें दयानन्दाब्द का परिवर्तन इस तिथि को न करके नवीन विक्रम संवत् के प्रवर्तन के साथ करती हैं। अतः 'परोपकारी' फरवरी (द्वितीय) 2018 में ही दयानन्दाब्द परिवर्तित करके 194 कर देना चाहिए था। आशा है कि 'परोपकारी' के विद्वान् सम्पादक अगले वर्ष से इसका ध्यान रखेंगे। प्रसंगतः यह भी उल्लेखनीय है कि अभी भी आर्य समाज की ऐसी अनेक पत्रिकाएँ हैं जो दयानन्दाब्द की संख्या गलत अंकित करती हैं, जबकि सभी आर्य समाजें दयानन्द जयन्ती ठीक तिथि और तारीख को मनाती हैं। ध्यातव्य है फाल्गुन कृष्णपक्ष (बदि) दशमी 2074 विक्रम संवत् तदनुसार 21 फरवरी 2017 ई. से लेकर फाल्गुन कृष्णपक्ष (बदि) नवमी 2074 विक्रम संवत् तदनुसार 9 फरवरी 2018 ई. तक दयानन्दाब्द 193 था। सम्प्रति 10 फरवरी 2018 ई. (फाल्गुन बदि दशमी 2074 संवत्) से दयानन्दाब्द 194 चल रहा है।

अमेठी, उ.प्र.
चलभाष: 9415185521

घोषा काक्षीवती

● शिवनारायण उपाध्याय

घोषा काक्षीवती ऋग्वेद मण्डल 10 के सूक्त 39 तथा 40 की द्रष्टा हैं। वे काक्षीवान की पुत्री थी इसलिए वेद में इनका नाम घोषा काक्षीवती मिलता है। बृहद् देवता में इनके संबंध में लिखा हुआ है कि अस्वस्थ रहने के कारण घोष लम्बे समय तक अविवाहित रही थी फिर देवताओं के वैद्य अश्विनों की उपासना कर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। दोनों सूक्तों में चौदह–चौदह ऋचाएँ हैं और उनमें मुख्य रूप से अच्छे स्वास्थ्य और सच्चे ज्ञान प्राप्ति के विषय में वर्णन है।

अब हम वेद की कुछ ऋचाओं पर विचार करते हैं।

यो वां परिज्मा सुवृदश्विना रथो
दोषामुषासो हव्यो हविष्मता।
शश्वत्तमासस्तमु वामिदं वयं
पितुर्ननाम सुहवं हवामहे।।

ऋ.10.39.1.

हे (**अश्विना**) प्राणापानो। (**यः**) जो (**वाम्**) आप दोनों का (**परिज्मा**) सर्वतो (**गन्ता**) विविध कार्यों में होने वाला (**सुवृत्**) शोभन रूप से चलने वाला (**रथः**) यह शरीर रूपीरथ है वह (**दोषाम् उषासः**) दिन–रात अर्थात् सदैव (**हविष्मता**) त्यागपूर्वक अदन करने वाले पुरुष से (**दृव्यः**) पुकारने के योग्य है, चाहने योग्य है (**सुवृत्**) और यह विविध कार्यों के योग्य बना रहेगा। हे अश्विनो। (**वाम्**) आपके (**तं अस्तु**) उस इस शरीर को (**शश्वत्तमासः**) स्फूर्ति वाले आलस्य रहित (**वयम्**) हम (हवामहे) पुकारते हैं। (**न**) जैसे (**पितुः**) परमपिता परमेश्वर के (**सुहवंनाम**) सुगमता से पुकारने योग्य नाम को।

भावार्थ– प्राणायान को सम्बोधन कर कहा गया है कि आप दोनों का विविध प्रकार व्याप्त होने वाला यह जो शोभायमान शरीररूपी रथ है वह सदैव त्यागी पुरुष से चाहने योग्य है। यह सदैव विविध कार्यों को करने में सक्षम रहे। हम चाहते हैं कि यह शरीर सदैव स्फूर्तिवान् बना रहे और हम प्रभु स्मरण करते रहें।

चोदयतं सुनृताः पिन्वतं धिय
उत्पुरन्धीरीरयतं तदुश्मसि।
यशसं भागं कृणुतं नो अश्विना सोमं
न चारुं मधवत्सु नस्कृतम्।। 2।।

हे (**अश्विना**) प्राणापानो। (**सुनृताः चोदयतम्**) भद्र वाणियों को हममें प्रेरित कीजिए। यह वाणी (**सु**) उत्तम हो (**ऊन**) दुःखों को हटाने वाली हो तथा (**ऋत**) सत्य हो। आप (**धियः**) ज्ञानपूर्वक किए जाने वाले कर्मों को (**पिन्वतम्**) हम में पूरित कीजिए। (**पुरन्धीः**) पालक बुद्धियों को (**उत**) इसी दृष्टिकोण से (**ईरयरतम्**) उद्रत कीजिए। (**तद् उश्मसि**) सो हम यही चाहते हैं कि सुनृत वाणी बोलें, ज्ञानपूर्वक कर्मों को करें तथा पालक बुद्धियों से युक्त होवें। हे (**अश्विना**) प्राणा प्राणो। (**यशसं भागम्**) यश के कारणभूत धन को (**नः**) हमारे लिए (**कृणुतम्**) करिये। (**नः**) हमारे (**मधवव्त्सु**) ऐश्वर्यों का यज्ञों में विनियोग करने वाले पुरुषों में (**सोमं न**) सोम की तरह (**चारुम**) क्रियाशीलता को (**कृतम्**) उत्पन्न कीजिए।

भावार्थ– हम सदैव भद्र वाणी बोलें, ज्ञानपूर्वक कर्मों को करें तथा पूरक बुद्धियों से युक्त हों। यशस्वी धन को प्राप्त करें।

यूवं रथेन विमदाय शुन्ध्युवं ब्यूह्थुः
पुरुमित्रस्य योषणाम्।
यूवं हवं बधिमत्या अगच्छातं युवं
सुषुतिं चक्रथुः पुरूधये।। 7।।

हे अश्विनो (**यूवम**) आप दोनों (**विमदाय**) गर्व रहित पुरुष के लिए (**रथेन**) इस शरीर रूपी रथ के द्वारा (**पुरुमित्रस्य**) प्राणिमात्र के मित्र उस प्रभु की (**शुन्ध्युवम्**) जीवन को शुद्ध बनाने वाली (**योषणाम्**) अवगुणों से पृथक् वेदवाणी को (**न्यूह्थुः**) निश्चय से प्राप्त कराते हो। (**यूवम्**) आप दोनों (**वधिमत्वाः**) अपनी इन्द्रियों को संयम यज्ञ द्वारा (**हवं अगच्छतम्**) पुकार को सुनकर उनको प्राप्त होते हो। (**पुरन्धये**) पालक बुद्धि वाली के लिए (**सुषुतिम्**) उत्तम ऐश्वर्य को (**चक्रथुः**) करते हो।

भावार्थ– प्राणापान के द्वारा गर्व विहीन पुरुष के लिए शरीर रूपी रथ के द्वारा प्राणीमात्र के मित्र परमात्मा की जीवन को शुद्ध बनाने वाली वेदवाणी निश्चय से प्राप्त करायी जाती है।

एतं वां स्तोममश्विनावकमतिक्षाम
भृगवो न रथम्।
न्यमृक्षाम योषणां न मर्ये नित्यं न
सूनुं तनयं दधाना।।

ऋ.10.39.14

हे (**अश्विनो**) प्राणापानो। (**वाम्**) आप दोनों (**एतं स्तोमम्**) इस स्तवन को (**अकर्म**) हम करते हैं कि (**भगवान**) भगुओं की तरह हम (**रथं अतक्षाम**) इस शरीर रूपी रथ का निर्माण करते हैं। (**योषणां न**) पत्नी की तरह इस वेदवाणी को (**न्यमृक्षाम**) पूर्ण शुद्ध करते हैं। (**मर्ये**) अपने इस मरणधर्मा शरीर में उस (**तनयम्**) हमारी शक्तियों का विस्तार करने वाले (**नित्यं सुनुं न**) प्रेरक प्रभु को (**दधानाः**) हम धारण करने वाले होते हैं।

भावार्थ– अश्विनों के स्तवन से हम शरीर को सुन्दर बनावें। वेदवाणी को शुद्ध रूप में जानकर अवगुणों को दूर करें तथा शरीर में शक्ति का विस्तार करें।

आगे सूक्त 40 में भी इसी विषय को विस्तार दिया गया है।

कुह स्विददोषा कुह
वस्तोरश्विनाकुहाभिपित्वंकरतकुहोषतुः
को वां शयुत्रा विधवेव देवरंमर्यं न योषा
कृणुते सधस्थ आ।।

ऋ.10.40.2

हे (**अश्विना**) प्राणापानो (**बुह**) कहाँ (**दोषा**) रात्रि में (**स्वित्**) होते हो (**अभिपित्वं करतः**) अभि प्राप्ति को करते हो। (**कुह**) कहाँ (**वस्तोः**) दिन में होते हो, कुह कहां (**ऊषतु**) आपका निवास होता है। (**कः**) कोई व्यक्ति ही (**वाम्**) आप दोनों को (**सधस्थे**) आत्मा और परमात्मा के स्थित होने के स्थान हृदय में (**आकृणुते**) अभिमुख करता है। हमें प्राणों को इस प्रकार अभिमुख करने का प्रयत्न करना चाहिए (**इव**) जैसे कि (**विधवा**) विधवा स्त्री (**देवरम्**) देवर को अभिमुख करती है और (**न**) जैसे (**योषा**) प्रत्नी (**शयुत्रा**) शयन में (**मर्यम्**) पति को अभिमुख करती है।

भावार्थ– प्राणापान रात्रि में सब इन्द्रियों के सो जाने पर भी अपना कार्य करते रहते हैं। रात्रिकाल में शरीर के शोधन का सम्पूर्ण कार्य ये ही करते हैं। हमें प्राणापान को इस प्रकार अभिमुख करना चाहिए जैसे विधवा स्त्री देवर के प्रति अभिमुख होती है अथवा पत्नी अपने शयनागार में पति के प्रति अभिमुख होती है।

युवं ह भुज्युं युवमश्विना वशं युवं
शिञ्जारमुशनामुपारथुः।
युवो ररावा परि सख्यमासते युवोर
हमवसा सुम्नमा चके।।

ऋ.10.40.7

हे (**अश्विना**) प्राणापानों। (**युवम्**) आप दोनों (**ह**) निश्चय से (**भुज्यम्**) पालन के लिए भोजन करने वाले को (**उपारथुः**) प्राप्त होते हो। (**युवम्**) आप दोनों (**वशम्**) अपनी इन्द्रियों को वश में करने वाले को प्राप्त होते हो। (**युवम्**) आप दोनों (**शिञ्जारम्**) भूषणों के शब्द की तरह मधुर शब्दों में प्रभु की उपासना करने वाले को प्राप्त होते हो। (**उशनाम्**) सर्वहित की कामना करने वाले को आप प्राप्त होते हो। (**ररावा**) त्याग की वृत्ति वाला पुरुष (**युवोः**) आप दोनों की (**सख्यम्**) मित्रता को (**परि आसते**) सर्वथा प्राप्त करता है। सो (**अहम्**) मैं (**युवोः अवसा**) आप दोनों के रक्षण से (**सुम्नम्**) सुख की (**आचके**) कामना करता हूँ।

भावार्थ– पालन के लिए भोजन करने वाले व्यक्ति के प्राणापान ठीक से चलते रहते हैं। प्राणापान पर उचित नियंत्रण से इन्द्रियों पर भी नियंत्रण हो जाता है। परमात्मा के उपासक के भी प्राणापान ठीक से चलते रहते हैं। त्याग की वृत्ति वाले पुरुष के प्राणापान भी ठीक से कार्य करते हैं।

अब एक ऋचा और देकर विषय को विराम देते हैं।

ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ धत्तं रयिं
सहवीरं वचस्यवे।
कृतं तीर्थं सुप्रपाणं शुभस्पती स्थानुं
पथेष्ठामप दुर्मतिं हतम्।।

ऋ.10.40.13.

(**ता**) वे (**मन्दसाना**) हर्ष के उत्पन्न करने वाले प्राणापान। (**मनुषः**) विचारपूर्वक कर्म करने वाले के (**सहवीरम्**) वीर पुत्रों से युक्त (**रयिम्**) धन को (**आधतम्**) सर्वथा धारण करो। मैं आपकी कृपा से धन और उत्तम संतान को प्राप्त करूँ। (**शुभस्पती**) सब शुभों के रक्षण करने वाले आप मेरे घर को (**तीर्थम् कृतम्**) तीर्थ बना दो। (**सुप्रपाणम् कृतम**) इस घर को आप उत्तम प्रकृष्ट प्याऊ बना दो। (**स्थाणुम्**) आप इस घर में परमात्मा को स्थिर कर दो। (**पथेष्ठाम्**) ये प्रभु हमें शुभ मार्ग पर स्थिर करने वाले होवें। (**दुर्मतिम्**) दुर्मति को (**अपहतम्**) हमसे सदा दूर रखो।

भावार्थ– प्राणापान से ठीक प्रकार से साध लेने पर हम वीर सन्तान से युक्त श्रेष्ठ धन को प्राप्त कर सकते हैं। प्राणापान की साधना से हमारा घर तीर्थ के समान पवित्र वातावरण युक्त हो जाता है। घर में श्रेष्ठ पेय पदार्थों की अल्पता नहीं रहती है और सदैव श्रेष्ठ मार्ग पर चलकर परमात्मा में स्थिर हो जाते हैं। इति शुभम्।

73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी,
कोटा (राज.)

सोम रक्षण से हृदय व इन्द्रियाँ उत्तम बनावें

● डॉ. अशोक आर्य

हम प्रभु की उपासना करते हुए अपने में सोम की रक्षा करते हुए हृदय तथा अपनी इन्द्रियों को उत्तम बनावें। हम सदैव यज्ञशेष का ही सेवन करें। इस तथ्य को ऋग्वेद के अध्याय 3 सूक्त 43 के मन्त्र संख्या 1 में इस प्रकार उपदेश किया गया है।

आ याह्यर्वा प वन्धुरेश्थास्तावेद्नु प्रदिवः सोमपेयम।
प्रिया सखाया वि मुचोप बर्हिस्त्वामिमे हव्यवाहो हवन्ते।।

ऋग्वेद 3.43.1

1. सोम रक्षण करें :

मन्त्र उपदेश करते हुए हमें सन्देश दे रहा है कि हे इंद्र देव! आप की समीपता, आपकी निकटता हमें पुरस्कृत करने वाली होती है। आपकी समीपता पाकर हमारा उद्धार हो जाता है, हमारे गुणों की वृद्धि होती है तथा हमारे दोषों का नाश हो जाता है। आपकी निकटता को पाकर हमारा नाम भी गुणी लोगों में जुड़ जाता है। इसलिए हे पभु! हमें अपने निकट स्थान दीजिए, अपने समीप रखिये। हमारे अंदर वासनाओं का भारी भंडार भरा है। यह वासनाएँ हमें आपके निकट नहीं आने देतीं, हमें आपके पास नहीं आने देतीं। इसलिए हे पिता! हमें इन वासनाओं से शून्य करें, वासनाओं से रहित करके हमें शुद्ध पवित्र कीजिए। जब तक हमारे अन्दर वासनाएँ भरी हैं, हम आपके निकट नहीं आ सकते। आपकी निकटता पाने के लिए शुद्धता, पवित्रता का होना आवश्यक है। यह शुद्धता, यह पवित्रता वासना युक्त शरीर में स्थानाभाव के कारण प्रवेश नहीं कर सकती। इसलिए हमारा वासना शून्य होना आवश्यक है। अतः हे परमपिता! हमें वासना शून्य कर शुद्ध और पवित्र करें तथा अपने निकट स्थान दें। हमें अपने निकट बैठने का अधिकारी बनावें। आप तो सदा शुद्ध, पवित्र, निर्मल हृदय में ही निवास करते हैं। इसलिए मुझे शुद्ध, पवित्र और निर्मल कर दीजिए।

2. ज्ञान के भंडारी बनावें

हे प्रभु! आप प्रकृष्ट ज्ञान के भंडार हैं। हमें भी अपने इस ज्ञान की कुछ बूँदे दीजिए। आप के इस प्रकृष्ट ज्ञान से ही सोम का, शक्ति का पान संभव है। इसलिए हे पिता! हमें ऐसी शक्ति दो कि हम इस सोम का पान करने वाले बनें तथा सब प्रकार की शक्तियाँ हमारे अंदर निवास करें। हम जानते हैं कि आप ही हमारे सोम के रक्षण का साधन हैं। इसलिए हम ज्यों ज्यों आपके निकट आते जाते हैं उतना उतना ही सोम हमारे अंदर प्रवेश करता जाता है। इसलिए प्रभु! हमें ऐसी शक्ति दो कि हम आपके अति समीप आ सकें ताकि हमें सोम का आधिक्य मिल सके।

3. हमारी कर्मेन्द्रियाँ उत्तम कर्म करें :

हे पिता! आपकी इस प्रीति के कारण ही, आपके इस स्नेह के कारण ही हमें अच्छे लगने वाले तथा हमारे साथ मिलकर कार्य करने वाले हमारे यह इन्द्रीय रूप घोड़े जो हैं इन्हें वासना शून्य करके ही खोलिए। ऐसा करने से ही हमारा हृदय वासनाओं से शून्य होकर शुद्ध तथा पवित्र हो जाएगा। इस प्रकार वासना शून्य होकर हमारी ज्ञान इन्द्रियाँ कार्य करने लगेंगी। इनके कार्य में गति आएगी, तेजी आएगी। इस प्रकार इन ज्ञान इन्द्रियों के माध्यम से आप का जो ज्ञान हमें मिलेगा, उस ज्ञान के अनुसार हमारी कर्मइन्द्रियाँ कार्य करने लगेंगी तथा हम उत्तम ज्ञान को पाने में सफल होंगे।

4. प्रतिदिन दो काल यज्ञ करें

इस प्रकार इस संसार के लोग उत्तम हृदय तथा प्रिय लगने वाले व इन इन्द्रियों को उत्तम प्रकार से चलाने वाले इन्द्रियों के घोड़ों को पाने के लिए हे पिता! आप की शरण में आकर, आपकी निकटता को पाने के लिए अनेक प्रकार के यज्ञ व हवन आदि करते हैं। हव्य पदार्थों को हवन में डालते हुए आपको पुकारते हैं, आपका स्मरण करते हैं। आप में ही सब सामर्थ्य है। आप ही हमें उत्तम शक्ति प्राप्त करा सकते हैं। आप ही हमें उत्तम हृदय दिला सकते हैं तथा आप ही उत्तम इन्द्रियों को दिलाने वाले हैं किन्तु यह सब आप उसे ही दिलाते हैं, जो हव्य का वहन करने वाले होते हैं, जो प्रतिदिन दो काल हवन करते हैं, यज्ञ करते हैं, परोपकार करते हैं। इतना ही नहीं जो आपके बनाए हुए पदार्थों का त्यागपूर्वक उपभोग करते हों, उनका ही आप साथ देते हैं। इसलिए प्रभु! हम यह सब कर रहे हैं ताकि आपका सच्चा आशीर्वाद हमें प्राप्त हो सके, आपकी निकटता मिल सके।

पाकेट–I प्लॉट–61 प्रथम तल
रामप्रस्थ ग्रीन, वैशाली–201010
गाजियाबाद
चलभाष–9718528068

ऋषि दयानन्द के पुरोधा पं. भवानी लाल भारतीय

● डॉ. महावीर मीमांसक

यह जानकर हृदय को अत्यन्त खेद और विषाद हुआ कि आर्यसमाज के पुरोधा पं. भवानी लाल भारतीय का निधन हो *गया। पं. भारतीय जी आर्य समाज और* ऋषि दयानन्द के प्रखर वक्ता, कुशल और सिद्धहस्त परिपक्व लेखक तथा प्रचुर साहित्य के सुर्तक थे। उनके वक्तव्य और लेख अत्यन्त उदार, उदात्त सुलझे हुये विचारों से परिपूर्ण तथा भाषा अत्यंत संयत, मंझी हुई और पूर्णतः संतुलित होती थी। उन्होंने अपनी पूरी आयु आध्यापन, लेखन और प्रवचन में समर्पित की। उन्होंने प्रचुर–साहित्य के भण्डार का सर्जन किया। जो सदैव उपयोगी रहेगा।

उनसे मेरा सर्वप्रथम संपर्क सन् 1920 में शांति निकेतन कलकत्ता में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या महासम्मेलन के अवसर पर हुआ। मैं महासम्मेलन का सक्रिय सदस्य अनेक वर्षों से था और रहा, पं. भारतीय जी भी उसमें पधारे हुये थे, उनके साथ डॉ. धर्मवीर जी, जो बाद में परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रधान रहे, वे भी थे। डॉ. धर्मवीर जी ने पं. भारतीय जी के मार्ग निर्देशन में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी, जबकि भारतीय जी अपने जीवन के सेवा काल (नौकरी) के अन्तिम दिनों में चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय में दयानन्द चेयर के प्रोफैसर अध्यक्ष थे। महाकवि आचार्य मेधाव्रत जी के "दयानन्द दिग्विजयम्" नामक संस्कृत के महाकाव्य पर मेरी "क्विजभङ्गला" नामक संस्कृत में ठीक पं. भारतीय जी ने पढ़ी थी, सम्भवतः इसी के कारण तथा अन्य कारणों से भी पं. भारतीय जी को मेरे प्रति स्नेह था। दयानन्द चेयर से सेवानिवृत्त होने के बाद पं. भारतीय जी ने मुझे उस पर काम करने के लिये आवेदन हेतु पत्र भी लिखा था, किन्तु किन्हीं कारणों से मैं उसके लिये तैयार नहीं हो सका।

पं. भारतीय जी से उसके बाद भी मेरा सम्पर्क बना रहा, कई विद्वत्–सम्मेलनों में मिलना भी होता रहा, उनके पत्र भी कई बार मुझे कुछ विशेष सन्दर्भों में मिलते रहे। उनसे दूरभाष पर बात पिछले वर्ष हुई थी। जिसमें उन्होंने मेरे "आर्यजगत्" में छपे आर्य समाज के सन् 1957 के हिन्दी–सत्याग्रह पर लिखे एक लेख के संदर्भ में बड़ा महत्त्वपूर्ण सुझाव दिया और कुछ दूसरी बातें भी की थीं। पं. भारतीय जी वस्तुतः ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के पुरोधा थे, उनकी क्षतिपूर्ति असम्भव है। प्रभु उनकी आत्मा को पुण्य लोक और शोक सन्तप्त परिवार को शांति प्रदान करे।

वैदिक शोध सदन
ए–3/11 पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063
मो. 9811960640

गौ-भक्तों से निवेदन

आप प्रतिदिन गाय का दूध प्रयोग करें।

गाय के दूध से बने उत्पाद दही, पनीर आदि का प्रयोग करें।

आप अपने घर की सफाई में गौ मूत्र में बने फियल का प्रयोग करें। गौ मूत्र कीट रोधी है?

गाय के गोबर से बने कपडों को जलाकर मच्छर भगाने का प्रयोग करें।

गौ मूत्र से बनी शुद्ध धूप, अगरबत्ती का प्रयोग करें।

धर्म रोगों के उपचार में गौ मूत्र का प्रयोग करें।

दैनिक गो–ग्रास का पालन करें।

आपके आस पास गाय पाली जाती है?

आप अपने परिचितों को गाय के पंचगव्यों के प्रयोग के विषय जागरूक करने का प्रयास करें।

कृष्ण मोहन गोयल
113–बाजार
कोट–अमरोहा–2442221

वेदों में अहिंसा की यथार्थता

● डॉ. सुनील वर्मा

मनुष्य के जीवन में देवासुर संग्राम निरंतर चलता रहता है, जब आसुरी प्रवृत्तियों का प्रभाव बढ़ जाता है तो क्लेशों का तूफान उमड़ पड़ता है। ये क्लेश काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या–द्वेष, अहंकार आदि विविध रूपों में उसे व्यथित करते हैं। इनके वशीभूत होकर वह मानव अन्य प्राणियों को कष्ट देने के लिए तत्पर हो जाता है। इसी प्रवृत्ति का नाम है 'हिंसा'। परंतु जब दैवी प्रवृत्तियाँ इन पर सात्विकता, शान्ति, श्रद्धा, प्रेम, उत्साह आदि से विजय प्राप्त करने में सफल हो जाती हैं तो सुखद साम्राज्य स्थापित हो जाता है। इन्हीं दैवी वृत्तियों की जननी एवं पोषिका वृत्ति का नाम है 'अहिंसा'।

वेद की शिक्षा तो कहती है ''सोमस्वरूप परमेश्वर को चाहने वालों तुम किसी की हिंसा मत करो।'' **''मा स्रेधत सोमिनः''** (ऋग् 7/32/9) आगे (ऋग् 7/32/21) कहा है **"न स्रेधत्तं रचिर्नशत्"** अर्थात् हिंसक वृत्ति वाला व्यक्ति मोक्षरूपी अनुपम सम्पदा को कदापि पा नहीं सकता। वेदों में हिंसा न करने और अहिंसा का परिपालन करने के विषय को अतिसूक्ष्मता एवं व्यापकता से प्रस्तुत किया है। परंतु सारे प्राणिजगत् में हिंसा से परिपूर्ण जीवन ही जीव का आहार बना हुआ है। सबल निर्बल को ग्रास बना रहा है, पीड़ित कर रहा है, दुःखी कर रहा है। ये सब हिंसक भावनाएँ उसके गुण, कर्म, स्वभाव की हिस्सा बन चुकी है। मानव इन सब भावनाओं से दुःखी है। सुख की प्राप्ति के लिए वह परमपिता परमात्मा से प्रार्थी है कि हे सविता देव! आप हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन दुःखों को दूर कर दीजिए, और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है वह सब हमको प्राप्त कीजिए।

''ओ३म् विश्वानिदेव... यद् भद्रम्, तन्न आसुवं।''

(यजु. 30/3)

द्वेषों के छुटकारे के लिए प्रार्थी है ''प्रभो आप सम्पूर्ण द्वेष युक्त कर्मों को हम से पृथक कर दीजिए।''

''विश्वा द्वेषांषि प्रभुमुग्ध्यस्मत्''

(ऋग् 4/1/4)

दुष्कर्मों से छुटकारा पाने के लिए परमात्मा से विनय करता है, वरिष्ठ विद्वानों से प्रार्थना करता है, "हे विद्वान पुरुषो! अत्याचार करने वाले, दान न देने वाले तथा दुःख देने वाले द्वेषभावों को हम से दूर करके कल्याण का मार्ग प्रशस्त करो।"

''अपामीवामप विश्वामनाहुतिम्... यच्छते स्वस्तये।''

(ऋग. 10/63.12)

वेद तो अहिंसा के परिपालन का आदेश देता है। प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखने का उपदेश देता है।

''मित्रस्य चक्षुसां सर्वाणि भूतानि समीक्षे''

(यजु. 36/18)

(यजु. 40/6) में तो स्पष्ट है कि जो मनुष्य भूतों अर्थात् जड़ चेतन सृष्टि को आत्मवत् अनुभव करता है, तथा सब के अन्दर आत्मतत्त्व को समाहित अनुभव करता है, वह आत्मदर्शन के कारण किसी से घृणा नहीं करता।

"आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति''

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो ने विजुगुप्सते।।

यजु. 40/6

जब मनुष्य सारे प्राणियों को आत्मवत् देखने लगता है तो फिर अपने पराए का कोई भेद नहीं रहता। **''पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः''** ऋ. 6/65/34 वह दूसरे के दुःख से ही व्यथित हो जाता है। बाल्मीकी रामायण इसी कथन का प्रमाण है। इस महाकाव्य आदि गन्थ का प्रारम्भ ही इसी भाव से है। जब वह महाकवि क्रीड़ामग्न क्रौञ्च पक्षी के जोड़े में से एक (नर पक्षी) को शिकारी के द्वारा मार दिए जाने पर पक्षी के विलाप से द्रवित हो उठता है तो उसके मुख से अनायास ही शब्द निकलते हैं–

मा निषाद् त्वं प्रतिष्ठामगमः शाश्वती समाः।
यत् क्रौञ्च मिथुनादेकं अवधीः काम मोहितम्।। बा. रा.

यह महर्षि बाल्मीकि में अहिंसा को आत्मसात् करने की पराकाष्ठा है। परिणामस्वरूप एक उत्कृष्टतम् काव्य रचना **''रामायण''** मनुस्मृति भी कहती है जो अपने सुख की इच्छा से निरपराध जीवों को मारता है वह जीता हुआ भी मुर्दा है। क्योंकि जो दूसरे प्राणियों के दुःख का अनुभव नहीं कर सकता, वह कभी सुखी नहीं हो सकता। **वेदों में तो अध्वरः, अथर्वा, अनेहस, अह्नया आदि पद अहिंसा पालन के स्पष्ट संकेत देते हैं।**

इसके विपरीत पाश्चात्य विद्वानों तथा उनके अनुयायी भारतीय विद्वानों ने यह मत प्रकट कर ऐसा भ्रम फैलाया कि भारत में आर्य लोग गोमांस भक्षण करते थे। (Vedic Index, Vol. 12, Page 147) Macdonell and Keith. इसका कारण था वेदों को प्रकारणशः समझने की योग्यता का अभाव, वेदों को स्वयं न पढ़कर अन्यों के भाष्यों पर विश्वास, पाश्चात्यों द्वारा वेद की निन्दा कर भारतीयों को वैदिक धर्म के प्रति ग्लानि उत्पन्न करने की व्यापक योजना।

हिंसा मुख्यतः तीन प्रकार की है। जिस प्रकार हर कार्य के लिए तीन पद है–मनसा, वाचा, कर्मणा।

मानसिक हिंसा– मन के संकल्प द्वारा हिंसा। जैसे किसी को मन से कष्ट पहुँचाना, मन से क्लेश देने सम्बन्धी, दूसरों के मानसिक संतुलन को बिगाड़ना।

वाचिक हिंसा – वचन द्वारा हिंसा करना, कटु वचन बोल कर दूसरों को कष्ट देना। सत्य एवं मधुर वचन द्वारा ही कटुता पर विजय पाई जा सकती है। मनु के शब्दों में

''सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयाद् एव धर्मः सनातनः।।''

मनु. 4/138

महाभारत कटु वचन का ही प्रमाण है।

शारीरिक हिंसा – किसी के प्राण हरण करना, शारीरिक हिंसा द्वारा पीड़ा पहुँचाना, कष्ट देना आदि। वेदों में तो हिंसा नहीं अपितु सभी प्राणिमात्र के कल्याण, समृद्धि एवं शांति की प्रार्थनाएँ हैं।

''शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे''

(यजु 36/8)

सभी दो पाँवों वाले मनुष्यों, पशु, पक्षी, चौपाए, गौ आदि का कल्याण हो। वेद में तो गाय का नाम ही **''अह्नया''** है।

''रूपायाध्नये ते नमः'' (अथर्व 10/10/1) हे अध्नय (अवध्य) गौ तेरे सुन्दर स्वरूप को प्रणाम हो।

''गां मा हिंसी'' (यजु. 13/47) गाय की हिंसा मत करो।

सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाहनयां।।

हे गृहस्थो! तुम सब समान–समान हृदय रखो। एक दूसरे को ऐसे चाहो जैसे गाय सद्यः जात बछड़े को प्यार करती है। इसी प्रकार शान्तिकरणम् के मन्त्रों (ऋ.35/1–13) में अग्नि, जल, वायु, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, पर्वत, मेघ, समुद्र, रात–दिन, औषधि, वनस्पति, मन, बुद्धि, प्राण आदि में सुख एवं शांति की कामना की गई है।

अहिंसा के प्रतिपालन के लिए हिंसा की भी यथार्थता है। दण्ड–विधान हिंसा नहीं है। वेदों में जहाँ प्राणी मात्र को मित्र की दृष्टि से देखने के बार–बार निर्देश हैं वहीं वेद विद्वान–द्वेषी, मांस भक्षी, क्रूर प्रकृति वाले, पाप की प्रशंसा करने वालों को बींध देने, बन्धन में डाल देने तथा अंग–भंग करने के भी आदेश हैं। (अथर्व 8/4/1–25) जो वीर पुरुष क्रूर, हिंसकों को मारता है, उसके लिए प्रतापी (शुक्रशोचि) अमर, पवित्र, शुद्ध करने वाला, स्तुति करने योग्य, अग्नि के समान तेजस्वी विप्र सखा, आदि विशेषणों का प्रयोग किया है। (अथर्व 8/3,20,22,26)

इसी प्रकार यदि कोई गौ, अश्व या प्रिय पुरुष को मारता है तो उसे गोली से बींधने का आदेश है। (अथर्व 16/4)

पापियों को दण्ड देना हिंसा नहीं, वेद में दिया गया दण्ड विधान अहिंसा की रक्षा के लिए है (अथर्व 9/3/12,13,19) (अथर्व 8/4/1–25) प्रशासक के कठोर दण्ड देने का औचित्य बताते हुए मनु महाराज कहते हैं–

दण्डः शास्ति प्रजा, सर्वादण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः।।

मनु 7/10

दण्ड ही सारी प्रजा पर शासन करता है, दण्ड ही रक्षा करता है, दण्ड ही सोए हुए लोगों में जागता है। अतः बुद्धिमान लोग दण्ड को ही धर्म मानते हैं। श्री रामचन्द्र जी एवं योगिराज कृष्ण भी अहिंसा के भक्त थे, परंतु दुष्टों के संहार में वे पीछे नहीं हटे। विश्वामित्र ने श्री राम को दुष्ट–दलन हेतु शस्त्रास्त्र का प्रशिक्षण भी दिया। यद्यपि वे स्वयं भी शत्रुओं का संहार कर सकते थे, परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। क्योंकि वे स्वयं तो हिंसा रहित **(अध्वरं)** यज्ञ कर रहे थे। अध्वर अर्थात् जिस कार्य में हिंसा न हो। **''ध्वरति हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधः अध्वरः''** (निरुक्त 1/8)

महर्षि पतंजलि ने अपने योग–दर्शन में अष्टांगों में सबसे प्रथम 'यम' को स्थान दिया है और उन पाँच यमों में अहिंसा प्रथम स्थान पर है। **तंत्राहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्या परिग्रहा यमाः।।** (योग दर्शनम् 2/30) अहिंसा का मार्ग अपनाने से वैर त्याग कर दिया जाता है।

अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैर त्यागः (योग दर्शन 2/35) महर्षि दयानन्द इसका अर्थ करते हैं, "जब अहिंसा धर्म निश्चय (व्यवहार में दृढ़) हो जाता है तब उस पुरुष के मन से वैर–भाव छूट जाता है, किंतु उसके सामने या उसके संग से अन्य पुरुष का भी वैर–भाव छूट जाता है।

(ऋ.भा.भू. उपासना विषय)

वेदों में जहाँ अहिंसा का उपदेश है वहीं अहिंसा की रक्षार्थ हिंसा के निर्देश भी हैं। परशुराम इस पंक्ति का परिपालन करते हुए गर्जना करते हैं–

अग्रतश्चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरो धुनः।
इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शास्त्रादपि शरादपि।।

अर्थात् सम्मुख चारों वेद, पीछे शास्त्र। यह ब्रह्मत्व के रूप में शास्त्र है और क्षत्रियत्व के रूप में शस्त्र। यही है अहिंसा की यथार्थता।

गली मास्टर मूलचन्द वर्मा
फाजिलका–152123
मो. 7009822720

यज्ञशाला

● यश वर्मा

यह सारा संसार, सारा ब्रह्मांड उस प्रभु, उस परम पूजनीय परमपिता परमेश्वर की यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में सूर्य, चन्द, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश सभी मिलकर आहूतियाँ डाल रहे हैं प्रभु के यज्ञ में। सब इस यज्ञ में यजन कर रहे हैं। इस यज्ञ द्वारा प्राणी मात्र का पालन पोषण हो रहा है। सूर्य प्राणी मात्र को जीवन प्रदान कर रहा है अग्नि रूप में, वहीं चन्द्र साथ–साथ शीतलता प्रदान कर रहा है। जल रस दे रहा है। पृथ्वी तो सब का आधार है ही। वायु हमारे प्राण हैं तो आकाश हमें स्थान दे रहा है गति के लिए। वनस्पति जगत् को देखिए, कितने प्रकार के फल–फूल, मेवे, अन्न, सब्जियाँ, औषधियाँ, अनेक प्रकार के स्वाद, रस, गन्ध, गुण लिए हुए हैं। कहीं घने जंगलों से भरे हुए पर्वत हैं तो कहीं पर बर्फ से ढके हुए पर्वत, मानो प्रकृति ने सफेद चादर ओढ़ा दी हो पर्वतों को। कल–कल करती हुई नदियाँ मानो प्रभु का गुणगान करती हुई, ऊँचे पर्वतों से चलकर मैदानों में आ रही हैं हरियाली बिखेरने खेतों के अन्दर, हमारे घरों को अन्न से भरने के लिए। एक ओर वनस्पति जगत है तो दूसरी ओर सोने, चाँदी, हीरे, लोहे, कोयले न जाने कितने प्रकार के पदार्थ भर दिए प्रभु ने इस पृथ्वी में। समुद्र में अथाह जल राशि है और न जाने कैसे–कैसे जीव और साथ ही कितना ऐश्वर्य भर दिया – सीप, मोती, मूंगे, रत्न आदि के रूप में। कैसे सैंकड़ों–हज़ारों मील से वह जल राशि वर्षा के रूप में हमारे पास, हमारे घर, खेत में आ जाती है। हमें खुशी व ऐश्वर्य देने के लिए। प्रभु की इस सुन्दर सुखद यज्ञशाला में नाना प्रकार के कीट–पतंग, पशु–पक्षी, मानव, वनस्पति सब किसी न किसी रूप में एक–दूसरे के सहायक बने हुए हैं। यह सब प्रभु का यज्ञ ही तो चल रहा है इस संसार रूपी यज्ञशाला में।

जिस प्रकार प्रभु की यह सुन्दर यज्ञशाला है, उसी प्रकार हमारा यह मानव शरीर भी एक अनुपम यज्ञशाला है। यजुर्वेद का एक मंत्र है –

ओ३म् सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे,
सप्त रक्षन्ति सदम प्रमादम्।
सप्त आपः स्वपतोलोकमीयुस्तत्र
जाग्रतो अस्वपनप्रजौ सत्र सदौ च देवौ।।

यजु. 34/55

इस सुन्दर मंत्र का अर्थ है कि शरीर में सात ऋषि स्थापित हैं जो इस यज्ञशाला की प्रमाद रहित होकर रक्षा करते रहते हैं। सुषुप्त अवस्था में यह सात ज्ञान प्रवाह अपने लोक में लीन हो जाते हैं। तब भी यज्ञ में बैठे रहने वाले दो देव, कभी न सोने वाले, जागते रहते हैं।

यह जो हमारा मानव देह है, यह एक पवित्र यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में सात ऋषि यजन कर रहे हैं। ये सात ऋषि कोई और नहीं बल्कि हमारे आँख, नाक, कान, रसना, त्वचा, मन और बुद्धि हैं। इनका कार्य है रूप, गंध, श्रवण, रस, स्पर्श, मनन व अवधारणा (निश्चय)। यह ज्ञान शक्तियाँ प्रभु ने इस देह में यजन के लिए प्रदान की हैं। जाग्रत अवस्था में ये सातों ऋषि भजन करते रहते हैं, कभी आँख नहीं कहती कि मैं नहीं देखती अथवा, मन नहीं कहता कि मैं आज मनन नहीं करूँगा। सातों ऋषि निरंतर कार्यरत रहते हैं। स्वप्नावस्था में भी अपना–अपना कार्य करते रहते हैं। लेकिन सुषुप्ति अवस्था में ये अपने–अपने लोक में लीन हो जाते हैं। ऐसे समय में भी दो देव इस देह में ऐसे हैं तो जन्म के भी पहले से और मृत्यु पर्यन्त सदैव यजन करते रहते हैं। वे दो देव हैं आत्मा व प्राण। आत्मा का कार्य है दर्शन शक्ति अथवा ज्ञान शक्ति। प्रगाढ़ निद्रा आने पर हम प्रातः उठकर कहते हैं कि आज बढ़ी अच्छी नींद आई। यह ज्ञान आत्मा को ही तो होता है। प्राण, निद्रा में भी प्राण शक्ति प्रदान करता है तभी तो हमारे में पुनः कार्य करने की शक्ति आ जाती है। थके हारे सोते हैं व प्रातःकाल तरोताज़ा उठते हैं।

परमात्मा की यज्ञशाला को तो मानव ने बहुत प्रदूषित कर दिया है चाहे वह वायु हो, चाहे जल हो या आकाश मण्डल हो या पृथ्वी हो, किसी को नहीं छोड़ा। बहुत ही विचारणीय प्रश्न है मानव के लिए अन्यथा प्रकृति तो अपना भयावह रूप दिखाएगी ही।

परमात्मा ने ये सात शक्तियाँ दी हैं मानव को यजन के लिए। भोग तो पशु भी भोग रहे हैं इस प्रकृति को। क्या मानव भी इसीलिए भेजा है संसार में प्रभु ने, कि जा संसार को, प्रकृति को भोग ले। यदि कोई ऐसा सोचता है तो गलत है। प्रभु ने एक लक्ष्य देकर भेजा है हमें और वह है प्रभु की प्राप्ति, भगवत प्राप्ति। तभी तो वेद का मन्त्र है –

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं ......

सौ वर्ष तक इन ऋषियों का यजन देखना, सुनना, मनन आदि प्रभु को पाने के लिए हो केवल भोग के लिए नहीं। जितना भोग करो वह भी त्याग भाव से हो।

विचारणीय बात तो यह है कि क्या ये ऋषि भगवदयजन को छोड़ तो नहीं बैठे इस संसार की चकाचौंध में, इस रंगीली दुनिया में। कहीं यह ऋषि पथभ्रष्ट तो नहीं हो गए। ये ऋषि पथभ्रष्ट न हों इसीलिए हम गायत्री मन्त्र में व अन्य कुछ मन्त्रों में जैसे ओ३म् यां मेघां देवगणाः... में प्रभु से बुद्धि की कामना करते हैं। हमारी बुद्धि पवित्र हो, सन्मार्ग पर चलने वाली हो। बुद्धि पवित्र रखने के लिए हम सतसंग, स्वाध्याय, प्रभु चिन्तन आदि का सहारा लेते हैं। यदि इसके ठीक विपरीत बुद्धि कुमार्ग की ओर चल पड़ी तो हमारी कामनाएँ बढ़ जाती हैं, और कामना पूर्ण न होने पर व्यक्ति को क्रोध आता है। क्रोध से सर्वप्रथम तो व्यक्ति का चेहरा बिगड़ जाता है। जब आप क्रोध में हैं तो एक बार शीशा देख लेना और फिर बताना मेरी बात ठीक है या नहीं। क्रोध से मूढ़ता बढ़ती है। क्रोध में किया गया कोई भी कार्य ठीक नहीं होता। क्रोध से भाषा बिगड़ जाती है, यहाँ तक कि बड़े–छोटे की तमीज़ नहीं रहती। पाचन क्रिया, ब्लड प्रेशर, दिल व दिमाग पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए जब भी क्रोध आए शुरू में ही थोड़ा–सा सम्भल जाओ। अच्छा बताइए सबसे अधिक क्रोध किस पर आता है। सोचने की आवश्यकता नहीं है, सीधा–सा उत्तर है, पति–पत्नी को एक दूसरे पर। अपने रिश्ते बहुत कीमती हैं। क्रोध करके अपने रिश्ते मत बिगाड़ो। कोई गलतफहमी हो जाए तो शीघ्र दूर कर लो, कहीं ऐसा न हो कि बहुत देर हो जाए और फिर कई दिन, मास और वर्ष बीत जाएँ। अपने दिमाग को खाली कर दो, विचारों को गुब्बारे की तरह हवा में उड़ा दो और कहो कि सब ठीक है (All is well) सहज रहो, हर परिस्थिति में सहज रहना सीख लो। घर हो, कार्यालय हो, समाज हो, सड़क पर हो, मन्दिर में, स्टेशन पर हो, कही पर भी हो, भीड़ में हो या जंगल में हो, सहज रहना सीख लो। दो व्यक्ति एक जैसी परिस्थिति में होते हैं परन्तु एक सहज होता है तो दूसरा असहज क्योंकि उनकी मन की स्थिति भिन्न–भिन्न है।

अपनी मनःस्थिति ठीक रखने के लिए हमें प्रभुमय बनना होगा, जिससे हमारा वस्तुओं से, रिश्ते नातों से, सुख–दुख से मोह नष्ट होने लगेगा। हमारे अच्छे विचार संस्कार बनेंगे। एक सभा के अन्दर एक विद्यार्थी महात्मा जी से पूछता है कि यदि मैं चोरी करके देसी घी खाता रहूँ तो क्या मेरे अन्दर शक्ति/बल नहीं आएगा। महात्मा जी उत्तर देते हैं कि बेटा तेरे में बल तो आ जाएगा लेकिन चोरी का घी तुझे चोर बना देगा और आगे जाकर तू डाकू भी बन सकता है, चोर–डाकू का परिणाम तो तू जानता ही होगा। इसलिए हम अपनी कामनाओं और क्रोध पर नियन्त्रण रखते हुए, अपने मन की स्थिति को शांत बनाए रखें व अच्छे विचारों के साथ संस्कारी बनें। हर परिस्थिति में समन्वित (Adjustment) करना सीख लें तो सुखी हो जाएँ। इसका अभिप्राय ऐसा नहीं कि इतना झुक जाएँ कि लोग हमें तोड़ दें। जैसे एक साँप था, सबको काटता था। शिव जी ने उसे कहा कि तुम लोगों को काटा मत करो। साँप नीचे लेट गया किसी को काटता नहीं था। लोगों ने उसके ऊपर से निकलना, फिर पैर रखकर निकलना प्रारम्भ कर दिया। साँप घायल हो गया, फिर शिव जी आए और उससे पूछा, यह क्या हो गया। तब उसने अपनी व्यथा सुनाई। तब शिवजी ने कहा, मैंने यह तो नहीं कहा था कि फुफकारना छोड़ दो। कहने का भाव है कि जीवन में थोड़ा झुकना, थोड़ा तनना, सीख लो। जैसे सितार को न बहुत अधिक कसा जाता है न बहुत ढीला किया जाता है, बस ट्यूनिंग की जाती है। इसी तरह हम भी अपने जीवन की यम–नियम के द्वारा ट्यूनिंग कर लें। थोड़ा अपने जीवन में लोकव्यवहार में निपुणता हासिल कर लें। हम अपने हाथ की ओर देखें जो हमें कर्म व धर्म को साथ मिलकर चलने की शिक्षा दे रहा है। हाथ की चार उगलियाँ कर्म का और अगूँठा धर्म का द्योतक है। जब चारों उगलियाँ और अगूँठा अर्थात् कर्म और धर्म साथ–साथ चलते हैं तो जीवन सफल हो जाता है। हमारे जीवन में केवल स्वार्थ न हो बल्कि परमार्थ की भावना हो। एक राजा के पास बीस अनमोल कृतियाँ थी। एक कृति एक सेवक से टूट गई तो राजा ने उसे फाँसी पर चढ़ा दिया। राजा ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो ऐसी कृति बना देगा उसे ईनाम दिया जाएगा। एक व्यक्ति आया राजा के पास और कहा कि मुझे उन्नीस कृतियाँ दिखाई जाएँ। उसे वे कृतियाँ दिखाई गई तो उसने वे सभी कृतियाँ तोड़ डाली। राजा को बहुत क्रोध आया। राजा ने पूछा कि यह तुमने क्यों किया, वह व्यक्ति बोला मैंने 19 व्यक्तियों की जान बचाई है। तब राजा को समझ आई कि अपनी जान की परवाह न करने वाला व्यक्ति कितना उपकारी है समाज के लिए। यह सोचकर बिना कुछ कहे उसे जाने दिया।

एक कवि की चार पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :–

आत्मज्ञान से अपने तू, दृष्टि का बदल कर ले,
जब जोत जगे अन्दर, प्रभु का दर्शन कर ले।
पीके ओ३म् नाम रस मीठा, तू ओ३म् भजन कर ले,
ओ३म् नाम सिमर कर ले, मुक्ति का यत्न कर ले।।

हम अपनी दृष्टि को सांसारिक पदार्थों से हटाकर थोड़ा–सा प्रभु की ओर लगा लें तो हम प्रभु की यज्ञशाला को पवित्र रखने में सहायक हो सकते हैं। इसके साथ हमारे देह के सातों ऋषि भी पवित्र रहकर पथभ्रष्ट होने से बच सकते हैं। यह हमारी मानव देह रूपी यज्ञशाला भी पवित्र रहेगी और हम प्रभु के प्यारे बन जाएँगे।

ओ३म् शांति शांति शांति।।

आर्य समाज मॉडल टाउन
यमुना नगर
मो. 9416446305

भय

● नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

अज्ञानता के कारण उत्पन्न हुई चित्त की वह भयानक वृत्ति जो मनुष्य को पतन की ओर ले जाती है भय कहलाती है। भय की उत्पत्ति का मूल कारण अल्पज्ञता, अज्ञानता और उससे उत्पन्न अंधविश्वास है। वेदमाता मनुष्य को भय भगाने का सुन्दर संदेश देते हुए कहती है **मा भेर्मा संविक्था उर्जा धत्स्व।** यजुर्वेद 6/35 मत डर मत काँप। बल पराक्रम और साहस धारण कर। किसी भी बीमारी के इलाज के लिए उसके मूल कारण को ढूँढ़ कर उसका निदान करना पड़ता है। ठीक उसी प्रकार इस भय के भूत को भगाने के लिए उसका मूल कारण अर्थात् अज्ञानता को दूर करना आवश्यक है।

मनुष्य के जीवन में सबसे बड़ा भय मृत्यु का होता है। **मृत्युरीशे** अर्थात मृत्यु तो हम सब पर शासन करती है। यह एक अटल सत्य है जिसका भी जन्म हुआ उसकी मृत्यु अवश्य होती है फिर इस ईश्वरीय व्यवस्था से हम इतना भयभीत क्यों रहते हैं। यदि गहराई से चिंतन करें तो इसका एकमात्र कारण मृत्यु के विषय में हमारी अज्ञानता है, हमारी आत्मा तो अजर, अमर, अविनाशी है। यजुर्वेद में आत्मा की अमरता का स्पष्ट संदेश है **वायुरनिलममृतमयेदम्।** 40।5 अर्थात् आत्मा अभौतिक और अमर है। इसी तथ्य को योगेश्वर कृष्ण ने विषाद में फँसे अर्जुन को कर्तव्य कर्म के निर्वहन की प्रेरणा देते हुए गीता का अमर ज्ञान देते हुए कहा था–

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं
भूत्वा भवति वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोयं पुराणो न
हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

आत्मा की अमरता के रहस्य का ज्ञान होने के बाद मनुष्य को मृत्यु का भय नहीं रहता। जिसे आत्मबोध हो गया वह मृत्यु से क्यों डरेगा। बीर हकीकत राय, महर्षि दयानंद सरीखे ऐसे कितने वीर धीर आत्मज्ञानी हुए जिन्होंने अंतिम समय में हँस मृत्यु की देवी का स्वागत किया।

मृत्यु के अतिरिक्त मनुष्य को जीवन में अपनी भौतिक संपत्ति खोने का भय भी बहुत सताता है। इसका एकमात्र कारण भी अज्ञानता है। हमारे पास जो कुछ भी है वह सब उस सुख स्वरूप सबका पालन करने वाले परमपिता परमेश्वर का दिया हुआ ही तो है। अब यदि किसी अन्य की दी हुई वस्तु को हम अपना मानकर खुद को उसका स्वामी समझने लगें तो उसके चले जाने पर मोह ममता के कारण एक स्वाभाविक भय, दुःख तो उत्पन्न होता ही है। अब यदि हम अपनी समस्त सुख सामग्री, धन ऐश्वर्य को ईश्वर प्रदत्त जानकर उसका नित्य प्रति धन्यवाद करते हुए **तेन त्यक्तेन भुंजीथा।** त्यागपूर्वक उपभोग के भाव से प्रयोग करेंगे तो उसके खो जाने या चले जाने का भय हमें नहीं सतायेगा। ज्ञान के प्रकाश से अपने जीवन को आलोकित करते हुए अज्ञानता के अंधकार को दूरकर, भय संशय को दूर कर सकते हैं।

भय को जीवन से दूर करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि भय से पैदा हुई कुप्रवृत्तियाँ पुरुषार्थ को खा जाती है। भय, पतन और पाप निश्चित कारण हैं। भय से बुराइयाँ उत्पन्न होती हैं दुःख आते हैं और मृत्यु आती हैं। समाज में मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है कि वह अज्ञानता और अविश्वास के कारण सदा एक दूसरे से भयभीत रहता है।

अपने जीवन में भयमुक्त होने का एक सबसे सरल उपाय है ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानकर उसकी शरण में अपना सर्वस्व समर्पित करना। एक बार यदि हम अपने को सर्वशक्तिमान निर्भय ईश्वर की शरण में सौंप देते हैं तो निश्चित रूप से हर प्रकार के भय से मुक्त हो जाते हैं। उपनिषदों में स्पष्ट संदेश दिया है–

अभयं वै ब्रह्माभयं हि वै ब्रह्म भवति
य एवं वेद।

निश्चय ही ब्रह्म निर्भय है तो उस ब्रह्म को जान लेता है वह ब्रह्म के समान निर्भय अर्थात् भयमुक्त हो जाता है।

502 जी. एच. 27 सै. 20 पंचकूला
मो. 09467608686

☞ *पृष्ठ 03 का शेष*

भगवान शंकर और दयानन्द

इच्छानुसार है। जैसी वह इच्छा करता है, सोचता है, वैसे ही उसका संसार बनता चला जाता है। इसीलिए कहते हैं कि माँ अपने बच्चे को बुरे संस्कार न दे, अच्छी भावनाएँ, अच्छे विचार देने का प्रयत्न करे। उसे दूध पिलाते समय अच्छा–बुरा वह जो कुछ सोचती है, उसका बच्चे पर प्रभाव पड़ता है। मैं कई स्थानों पर जाता हूँ। माता–पिता कहते हैं हमारा बच्चा बहुत नटखट है, उपद्रव बहुत करता है। मैं उन्हें कुछ नहीं कहता, परन्तु मन–ही–मन सोचता हूँ, इसमें दोष किसका है? जैसा तुमने बना दिया वैसा बन गया वह। अब उसे कोसते क्यों हो? इसलिए वेद में प्रार्थना करता हुआ भक्त कहता है –

'हे प्रभो! मेरे मन में अच्छे संकल्प पैदा हों, अच्छे विचार पैदा हों।' परन्तु केवल प्रार्थना करने से तो कुछ नहीं होता। प्रार्थना करो अवश्य परन्तु उसके साथ ही प्रार्थना के अनुकूल कर्म भी करो। बम्बई जाने की इच्छा हो तो उसे गाड़ी में चढ़ो जो बम्बई जाती है। यदि अमृतसर जानेवाली गाड़ी में बैठ जाओगे तो बम्बई कभी नहीं पहुँच सकोगे।

तीसरा साधन है त्याग। ब्रह्म को, ईश्वर को पाना चाहते हो तो उसके गुणों को अपने अन्दर लाने का प्रयत्न करो। उसका सबसे महान् गुण है त्याग; उससे बड़ा त्यागी और कोई नहीं। वह सब–कुछ दे देता है; अपने लिए कुछ भी उसको चाहिए नहीं। त्याग में सुख कितना है, इसे कुछ लोग समझ नहीं पाते। एक कथा सुनिये! एक था कृपण, इतना कंजूस कि अपने–आप पर भी धेला खर्च नहीं करता था। लाखों का स्वामी था, फटे कपड़े पहने रहता था। केवल एक अच्छी बात थी उसमें, सत्संग में जाता था। वहाँ भी उसे कोई पूछता न था। सबसे अन्त में जूतों के पास बैठ जाता, कथा सुनता रहता। भोग पड़ने का दिन आया, तो सब भेंट चढ़ाने कोई–न–कोई वस्तु लाये। वह कृपण भी एक मैले–से रूमाल में बाँध के कुछ लाया। सब लोग अपनी लाई वस्तु रखते गये, वह भी आगे बढ़ा। अपना रूमाल खोल दिया उसने। उसमें अशर्फियाँ थीं – पौण्ड और सोना। उन्हें पण्डित जी के समक्ष उँडेलकर वह जाने लगा। पण्डित जी ने कहा, "नहीं–नहीं सेठ जी! वहाँ नहीं, यहाँ मेरे पास बैठो।" सेठ ने बैठते हुए कहा, "यह तो रुपयों का सम्मान है पण्डित जी, मेरा सम्मान तो नहीं।" पण्डित जी ने कहा, "भूलते हो सेठ जी! रुपया तो तुम्हारे पास पहले भी था। यह तुम्हारे रुपये का नहीं, त्याग का सम्मान है।"

एक और कथा सुनिये! एक साधु किसी नगरी में रहता, भक्ति के गीत गाता था। लोग उसका सम्मान करते, उसे कितनी ही वस्तुएँ देते। साधु ने अपने शिष्य से कहा, "बेटा, चलो किसी दूसरे नगर में चलें।" शिष्य ने कहा, "नहीं गुरु महाराज, यहाँ चढ़ावा बहुत चढ़ता है, कुछ पैसे जमा हो जाएँ, फिर चलेंगे।" गुरु ने कहा, "पैसे को जमा करके क्या करेगा? चल मेरे साथ, पैसा जमा नहीं करना हमें।" चल पड़े दोनों। शिष्य ने कुछ पैसे जमा कर रखे थे; उन्हें उसने धोती में बाँध रखा था। चलते–चलते मार्ग में नदी पड़ गई। एक नौका वहाँ थी। नौकावाला पार ले–जाने के लिए दो–दो आने माँगता था। साधु के पास पैसे नहीं थे। शिष्य देना नहीं चाहता था। दोनों बैठ गये। दोपहर हो गई, सन्ध्या हो गई, रात हो गई, वे बैठे थे। रात को नाविक अपने घर जाने लगा तो बोला, "बाबा! तुम यहाँ कब तक बैठे रहोगे? यह है जंगल, रात को सिंह इस किनारे पर पानी पीने आता है। अन्य जंगली पशु भी आते हैं, वे तुम्हें मार डालेंगे।" शिष्य ने कहा, "तुम हमें पार ले चलो।" नाविक ने कहा, "मैं तो दो–दो आने लिये बिना नहीं ले जा सकता।" शिष्य को सिंह के विचार से लगा डर। धोती से चार आने निकालकर बोला, "अच्छा, नहीं मानता तो ले।" नाविक ने चार आने लिये, उन्हें पार ले गया। दूसरे पार जाकर शिष्य ने कहा, "देखा गुरुजी, आप कहते थे पैसा इकट्ठा करने की आवश्यकता नहीं। अब देखिये यदि हमारे पास पैसे न होते तो आज आपत्ति आती कि नहीं?" गुरु ने हँसते हुए कहा, "सोचकर देख बेटा! पैसा एकत्रित करने से तुम्हें सुख नहीं मिला। पैसे को देने से मिला। सुख त्याग में है, एकत्रित करने में नहीं।"

परन्तु त्याग का यह अर्थ नहीं कि कमाना भी बन्द कर दो। वेद कहता है सौ हाथों से कमाओ, पाँच सौ हाथों से खर्च कर दो। जो कमाया है उस पर साँप बनकर न बैठ जाओ। 'जलालपुर जट्टाँ' में एक सज्जन रहते थे। जीवनभर मैंने उन्हें कुर्त्ता पहनते हुए नहीं देखा। एक बार मैंने पूछा, "श्रीमन् आप कुर्त्ता क्यों नहीं पहनते?" वे बोले, "मैं शरीर पर प्रयोग करता हूँ।" जब वह सज्जन मरा तो उसके घर के कई बर्तनों में बन्द किया हुआ धन मिला। इस धन का उसे क्या लाभ हुआ? उसके लिए यह धन इस प्रकार था जैसे पंजाब नेशनल बैंक के चपरासी के लिए बैंक में पड़े हुए लाखों रुपये। न वह उन लाखों रुपयों का प्रयोग कर सकता है, न ये करते हैं। चपरासी उनसे अच्छी दशा में है, क्योंकि वह अपनी ड्यूटी पूरी करने के पश्चात् निश्चिन्त सुख की नींद सोता है; यह अभागा मनुष्य हर समय चिन्ता में डूबा रहता है, सो भी नहीं पाता।

क्रमशः

पत्र/कविता

उनकी कमी कोई पूरी नहीं कर सकेगा

आदरणीय भारतीय जी के अवसान के समाचार से मन अत्यन्त व्यथित व दु:खित है। उन जैसे इतिहासकार, प्रखर विचारक, अमूल्य योगदानकर्ता, मेधावी, ऐतिहासिक व्यक्तित्व का जाना आर्यजगत् के लिए तो अपूरणीय क्षति है ही, मेरे लिए निजी क्षति भी है। आर्यसमाज की किसी पत्रिका में प्रकाशित होने का अवसर सबसे पहले उन्होंने ही मुझे 'परोपकारी' पत्रिका में अपने सम्पादकत्व में दिया था। वर्ष 81–82 में चण्ड़ीगढ़ में उनके आवास पर रहने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ जब दयानन्द पीठ के अध्यक्ष के रूप में वेदार्थ विषयक एक संगोष्ठी उन्होंने आयोजित की थी। पश्चात् तो उनका स्नेह पाने का अनवरत क्रम ही चल निकला। गत एकाध माह पहले ही उनके सुपुत्र ने उनका सम्वाद भी फोन पर सुनाया।

विचित्र बात यह है कि अपना भारत का कार्यक्रम नियत करने के बाद मैंने निश्चय किया था कि इस बार वहाँ जाने पर उनका दर्शन लाभ ले कर आऊँगी और इस सन्दर्भ में परिवार में बात भी की व तय भी कर लिया था अक्तूबर में 17–18 को उनसे मिलना है। किन्तु विधाता ने यह अवसर हमें नहीं दिया। इस का दु:ख सर्वदा बना रहेगा।

आर्यसमाज ने क्या खोया है, बहुतों को तो यह अनुमान भी नहीं होगा। अब भारत में उन जैसे मेधावी विचारक, लेखक, उदारमना व सौम्य मृदु व्यवहार वाले विद्वानों का अकाल हो गया है। उनकी कमी कोई पूरी नहीं कर सकेगा। उनका योगदान आर्यसमाज के इतिहास की अमूल्य ऐतिहासिक पूँजी है व सदा रहेगा। महर्षि दयानन्द का ऋण चुकाने में उन्होंने अपना जीवन लगा दिया। यह क्षति सदा मथती रहेगी।

सात समुद्र पार से उन्हें हम दोनों का प्रणाम ही भेज सकती हूँ। ईश्वर उन जैसा कोई दूसरा भी धरती पर भेजे, यह प्रार्थना है। मेरी व डॉक्टर साहब की ओर से हार्दिक विनम्र श्रद्धाञ्जलि व सम्वेदनाएँ।

अल्का माथुर
आर्य समाज, ग्रेटर ह्यूस्टन
अमेरिका

****

जल्द बड़ा जो सोचता सफल वही हो पाए

लड़ा हारा युद्ध में, हारा उसे मत मान।
बिन लड़े मन हार गया, हारा उसको जान।।

बार बार कोशिश करे, जीत वही तो पाय।
कोशिश जिसने छोड़ दी, हार वही तो जाय।।

जल्द बड़ा जो सोचता, सफल वही हो पाय।
विचारों पर कोय कभी, कैसे हक जतलाय।।

मत बन टुकड़ा कांच का, चमक धूप में पाय।
तुम तो हीरा ही बनो, चमक सदा दिखलाय।।

कभी नहीं कुछ कर सके, ऐसा मानो पाप।
मुश्किल तो कुछ भी नहीं, उठो बढ़ो जब आप।।

ऐसी बहस करना नहीं, रिश्ता जाये हार।
जीत जो हमको बाँट दे, वह तो है बेकार।।

माता पिता और गुरु, हैं वही शिल्पकार।
कच्ची मिट्टी को सदा, देते जो आकार।।

नरेन्द आहूजा विवेक
602, जी.एच. 53 सैक्टर–20
पंचकुला (हरियाणा)
09467608588

छैल गैल्यां जांगी.....

सोयी हुई जनता जगाई दयानन्द ने।
वेदों की शिक्षा दिलाई दयानन्द ने।।
पाखण्ड था छाया हुआ, शिक्षा न दी जाती थी।
नारी तो बस शूद्र और नीच कहाती थी।।
स्त्री शिक्षा आरम्भ करवाई दयानन्द ने।
सोयी हुई.......................................।।
जाति–पाति द्वेषभाव भेद ऊँच नीच का।
अन्तर भी काफी था मानवों के बीच का।।
सभी की एक जाति बताई दयानन्द ने।
सोयी हुई.......................................।।
वेदों को तो कहते थे। कि शंखासुर ले गया।
बदले में पुराणों के गपोडों को दे गया।
फिर से वेद ज्योति जलाई दयानन्द ने।
सोयी हुई.......................................।।
लोग दासता की जंजीरों में जकड़े थे।
पण्डे पुजारी बस पेट यहाँ भरते थे।।
स्वराज की हुंकार लगा ई दयानन्द ने।
सोयी हुई.......................................।।
सच्चे शिव के भक्तो दयान्द की मान लो।
वेद है वाणी सच्चिदानन्द की जान लो।।
"सुफल" सच्ची भक्ति सिखाई दयानन्द ने।
सोयी हुई.......................................।।

आचार्य रामसुफल शास्त्री
आर्य समाज सैक्टर 7 बी
चण्डीगढ़
मो. 9416034759

गांधी व नेहरू के विचारों की छाप थी

अटल बिहारी बाजपेयी का 93 वर्ष की आयु में निधन हो गया। 13 दिनों के लिए, 13 माह के लिए और 4½ वर्षों तक तीन बार प्रधान मंत्री रहे। 2½ वर्षों तक विदेश मंत्री भी रहे।

आपने 1978 में अल्पसंख्यक कमिश्नर का पद समाप्त करके, अल्पसंख्यक आयोग बनाया।

विदेश मंत्री रहते हुए कहना था कि उन्हें मंत्री बनने पर लग रहा है कि धारा 370 नहीं हट सकती है।

उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिलों का अलग राज्य बनाना और राज्य का नाम उत्तराखण्ड के स्थान पर उत्तरांचल रखना। उनसे हुई गलतियाँ थीं।

स्वयं सेवकों के लिए भारतीय जनता पार्टी बनाई और ध्वज में भगवा रंग 2/3 करके हरा रंग 1/3 रखा गया। अल्प संख्यक मोर्चा बना दिया और गांधी जी को महान मानना शुरू कर दिया।

पूर्वोत्तर के दौरे पर आपने वक्तव्य दिया कि गोवध बन्दी कानून बना तो उससे तीनों ईसाई राज्यों को मुक्त रखा जाएगा। आपने दो बार गोभक्षक ईसाई नेताओं को राष्ट्रपति पद् का उम्मीदवार बनाया किन्तु दोनों हार गए। यदि कोई जीत जाता तो राष्ट्रपति भवन में गोमांस खाया जाता।

आपने मुस्लिम प्रेम दिखाने के लिए वैज्ञानिक अब्दुल कलाम को राष्ट्रपति बनाया जो 5 वर्ष तक पद पर रहे।

कांग्रेस ने 3 राज्यपाल बनाए थे। आपने शासन सम्भालते ही दोनों हिन्दू राज्यपालों को तो हटा दिया किन्तु तीसरे को नहीं हटाया क्योंकि वे मुस्लिम थे।

आपने कानपुर में उर्दू में प्रचार पत्रक छपवाएँ जिसमें हस्ताक्षर उर्दू में किए जबकि आपको उर्दू नहीं आती है।

आई. डी. गुलाटी
18/186 टीचर्स कॉलोनी
बुलन्दशहर (उ.प्र.)

****

एल.आर.एस. डी.ए.वी. अबोहर के खिलाड़ी तीरंदाजी में चमके

एल.आर.एस. डी.ए.वी. सीनियर सैकेंडरी मॉडल स्कूल अबोहर की प्रिंसिपल श्रीमती स्मिता शर्मा व आर्चरी कोच रवि कुमार ने बताया कि विद्यालय की तीरंदाजी टीम ने पंजाब स्कूल खेलों में भाग लेकर टूर्नामेंट की अलग-अलग प्रतिस्पर्धाओं में नौ स्वर्ण, ग्यारह रजत, व आठ कांस्य पदक जीतकर विद्यालय के इतिहास में एक नया अध्याय रचा है।

टूर्नामैंट के दौरान अंडर 14 आयु वर्ग में मास्टर देव अर्जुन को 3 स्वर्ण, 2 रजत और 1 कांस्य मिला। ईशांत को अंडर 14 रिकर्व आर्चरी में 5 रजत, 1 कांस्य मिला, खुशवंत को इंडियन राउंड के अंडर 14 में 1 स्वर्ण मिला।

प्रतियोगिता के अंडर 17 आयु वर्ग में अर्जुन को 1 स्वर्ण और 2 कांस्य मिले। राकेश ने अंडर 17 में 1 स्वर्ण जीता, ध्रुव राजोरिया को 1 स्वर्ण 1 रजत और 1 कांस्य पदक मिला। पर्व भठेजा ने इंडियन राउंड में 1 रजत पदक जीता, मनप्रीत ने अंडर 19 रिकर्व में 1 स्वर्ण 1 रजत 2 कांस्य पदक जीते। सोनाली ने अंडर 19 के इंडियन राउंड में 1 रजत जीता। अरशदीप ने अंडर 19 के इंडियन राउंड में 1 स्वर्ण और 1 कांस्य पदक प्राप्त किया।

आंध्रप्रदेश में अंडर 14 आयु वर्ग व झारखंड में अंडर 17 आयु वर्ग और नई दिल्ली में अंडर 19 आयु वर्ग की आयोजित होने वाली राष्ट्रीय स्कूल खेलों के लिए छह खिलाड़ियों का चयन किया गया है।

प्रिसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा ने विजेताओं को उनकी इस सफलता के लिए बधाई दी और आगामी प्रतियोगिता के लिए उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद दिया। सभी खिलाड़ियों को प्रातःकालीन प्रार्थना सभा में सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सुपरवाइजर श्रीमती सुनीता सहगल, श्रीमती मंजू डोडा, खेलकूद विभाग के श्री राजेश भटेजा, श्रीमती पूनम जाखड़ भी उपस्थित थे।

आर्य समाज वसंत कुंज में गुर्दे की बीमारी पर व्याख्यान

आर्य समाज वसंत कुंज नई दिल्ली से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार सितम्बर 2018 में रविवासरीय साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए।

स्वास्थ्य चर्चा के अन्तर्गत 23 सितम्बर को गुरुग्राम के नारायण अस्पताल के प्रसिद्ध नेफरोलाजिस्ट डॉ. सुदीप सिंह सचदेव को गुर्दे की बीमारियों के बचाव व इलाज के विषय में जानकारी देने के लिए आमन्त्रित किया गया। समाज के सभी सदस्यों ने डॉ. सचदेव द्वारा दी गई महत्त्वपूर्ण जानकारियों की भरपूर लाभ उठाया।

'स्त्री समाज' द्वारा आयोजित सत्संग में कई महिलाओं ने भाग लिया। आयोजित यज्ञ के यजमान थे प्रवीण व विद्योत्तमा।

आर्य समाज वसंत कुंज के प्रार्थना कक्ष में बड़ी संख्या में उपस्थित आर्य समाज के सदस्यों तथा आम जनमानस को 'कर्मयोगी टीम' ने सम्बोधित किया। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम व योगीराज कृष्ण के बतलाये धर्म सम्मत मार्ग पर चलते हुए महर्षि दयानन्द के 'सत्यार्थ प्रकाश' में वर्णित विचारों को व्यावहारिक रूप देने का आह्वाहन किया। भारत की सदियों पुरानी ऋषि परम्परा के संवाहक के रूप में आर्य समाज वसंत कुंज तथा आम जनमानस ने सम्मिलित रूप में देश विरोधी ताकतों से निरन्तर संघर्ष जारी रखने के लिए स्वयं को संकल्पबद्ध किया।

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में हुआ वैदिक कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, भट्टी गेट झज्जर में वैदिक यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन कार्यक्रम हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. एच.एस. यादव, पूर्व प्राचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झज्जर; मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता आर्य नेता आचार्य यशवीर बोहर (रोहतक); मुख्य यजमान श्रीमती मामकौर एवं श्री रती राम आर्य रहे।

लगभग 75 छात्र-छात्राओं ने हाथों के सूक्ष्म व्यायाम का शानदार प्रदर्शन किया। डॉ. एच.एस. यादव ने बताया कि सब बुराइयों का मूल कारण अज्ञानता (असत्यता) के साथ पर्यावरण के मूल तत्त्व का वायु-जल विषैला होना है। सत्य प्रमाणों और तार्किक सोच से अज्ञानता दूर होती है।

आचार्य यशवीर आर्य ने बताया कि हमारे लिए सौभाग्य कि बात है कि हम ईशकृपा से आर्य बनें। आर्य समाज के लिए सौभाग्य की बात तब होगी जब हमारी वजह से आर्य समाज संगठन उन्नत होगा। हमें देवताओ के बारे में शुद्ध ज्ञान होना चाहिये। सब देवताओं का स्वामी महादेव निराकार परमात्मा है।

आदर्श अध्यापिकाएँ श्रीमती सुमित्रा, अनिता एवं विमला देवी ने बताया कि ईश्वर उपासना से ईश कृपा से दिव्य गुणों की प्राप्ति होती है। भजनोपदेशक पं. जयभगवान आर्य, आर्य समाज झज्जर के प्रधान प्रा. द्वाराका वास, वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर के प्रधान पं. रमेशचन्द्र वैदिक ने बताया कि आर्य (श्रेष्ठ) व्यक्तियों की कथनी-करणी में एक रूपता रहती है।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 24/25-10-2018

डी.ए.वी. तलवंडी कोटा में 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, तलवंडी कोटा में छात्र–छात्राओं एवं शिक्षकों द्वारा विद्यालय परिसर और आस पास के इलाके में स्वच्छता अभियान चलाया गया। 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' कार्यक्रम के अतंर्गत विद्यालय प्राचार्या एवं उपक्षेत्रीय अधिकारी श्रीमती सरिता रंजन गौतम एवं विद्यालय के शिक्षकों शोभाराम आर्य, रमाशंकर योगी, नरेन्द्र सोलंकी एवं श्रीमती सरला चरपे की टीम ने विद्यालय परिसर एवं आसपास के क्षेत्र से कूड़ा कचरा एकत्र कर क्षेत्र को साफ सुथरा बनाया तथा लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरुक कर इस अभियान को गति प्रदान की।

आर्य युवा समाज के सदस्यों ने विद्यालय परिसर एवं आसपास के क्षेत्र से कूड़ा कचरा हटाया प्राचार्या ने अपने वक्तव्य में स्पष्ट किया कि स्वच्छता अच्छे स्वास्थ्य का मूल है, उससे ही पर्यटन को भी बढ़ावा मिलता है। हम सभी को निहायत जागरुक होना चाहिये कि कैसे अपने रोजमर्रा के जीवन में स्वच्छता को बनाये रखना है। अपनी आदत में साफ–सफाई को शामिल करना बहुत आसान है। हमें स्वच्छता से कभी समझौता नहीं करना चाहिये, ये जीवन में पानी और खाने की तरह ही आवश्यक है। इसमें बचपन से ही कुशल होना चाहिये जिसकी शुरुआत केवल हर अभिभावक के द्वारा हो सकती है पहली और सबसे बड़ी जिम्मेदारी के रुप में।

विद्यालय प्राचार्या एवं उपक्षेत्रीय अधिकारी श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की प्रेरणा से 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' बच्चों, शिक्षकों एवं आमजन में विद्यालय परिसर, समाज एवं देश के प्रति स्वच्छता के संस्कार का बीजारोपण करेगा। उन्होंने बताया की आर्य युवा समाज के सदस्य सीबीएसई द्वारा निर्धारित किये गए 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' में सम्पूर्ण पखवाड़े में अपना सक्रिय योगदान देंगे।

डी.ए.वी. जालंधर में भगत सिंह को समर्पित कार्यक्रम आयोजित

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय जालंधर में 'भगत एक सोच क्लब' द्वारा शहीद भगत सिंह को समर्पित एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें भाषण, क्विज़, रंगोली, पोस्टर मेकिंग और गायन प्रतियोगिताएँ करवाई गईं।

कार्यक्रम का शुभारंभ उपकुलपति डॉ. राकेश महाजन, डीन डॉ. देशबंधु गुप्ता, डीन स्टूडेंटस वेल्फेयर डॉ. जसबीर, और क्लब के मेंबरों ने किया। कार्यक्रम में शहीद भगत सिंह विचारधारा के साथ–साथ गांधीवादी विचारों पर भी चर्चा की गई। डॉ. महाजन ने कहा कि देश की आजादी के लिए भगत सिंह ने अपना बलिदान दे दिया वो आज के युवा पीढ़ी के रोल मॉडल हैं। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए देश सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

भाषण में गुरुकरणदीप सिंह ने पहला, अंशु राजपुत ने दूसरा और रोहित ने तीसरा, क्विज़ में चिराग, अमित और निशांत की टीम ने पहला, ऋषभ, मंजीत और सौरभ ने दूसरा, संचय, शिल्पा और जसलीन ने तीसरा, रंगोली में रणदीप और सिमरनजीत ने पहला, आरुषि, मानसी ने दूसरा, ने सोनल, पूजा, अनुप्रिया ने तीसरा, पोस्टर मेकिंग में गुरप्रीत ने पहला, आकांक्षा ने दूसरा और राहुल ने तीसरा स्थान हासिल किया। गायन में साहिल, मृदु और भावना विजेता चुने गये। प्रो. आर.के. सेठ और प्रो. बेदी ने जज की भूमिका अदा की। इस अवसर पर क्लब के मेंबर डॉ. गुरमीत सिंह, डॉ. राजबाला, डॉ. ममता, डॉ. बी.पी.एस. बेदी, डॉ. स्मृति, प्रो. हरि के. सिंह सहित अन्य स्टाफ सदस्य व विद्यार्थी उपस्थित थे।

हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर में मासिक यज्ञ का आयोजन

हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर में नॉन टीचिंग सदस्यों द्वारा मासिक यज्ञ का आयोजन किया गया। इस पावन अवसर पर मुख्य यजमान प्राचार्या सहित सभी सदस्यों ने सर्वमंगल की कामना हेतु यज्ञकुण्ड में आहुतियाँ डालीं। प्राचार्या ने मासिक विचार श्रृंखला में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम सब को अपने दायित्वों को पूर्ण ईमानदारी न निष्ठा से निभाते हुए अपने मनुष्य जीवन की सार्थकता को सिद्ध करना चाहिए। श्री पंकज ज्योति, सुप्रिन्टेंडेंट अकांउट्स ने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि मनुष्य को धन के पीछे न भागते हुए अपने कार्य को सुचारू रूप से करना चाहिए। श्रीमती सुनीता धवन, संस्कृत विभागाध्यक्षा ने अपनी मधुर वाणी में मन्त्रोच्चारण करते हुए वातावरण को ओ३म्मय व शान्तिमय बन दिया। प्राचार्या ने उन सदस्यों को उपहार भेंट कर सम्मानित किया जिनके जन्मदिवस इस मास में आने वाले हैं। सदस्यों द्वारा प्राचार्या को उनके जन्मदिवस पर गुलदस्ता देकर शुभकामनाएँ दी गईं। शान्ति पाठ के साथ यज्ञ सत्र का समापन हुआ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**